खिलती कलियाँ

हिन्दी विभाग

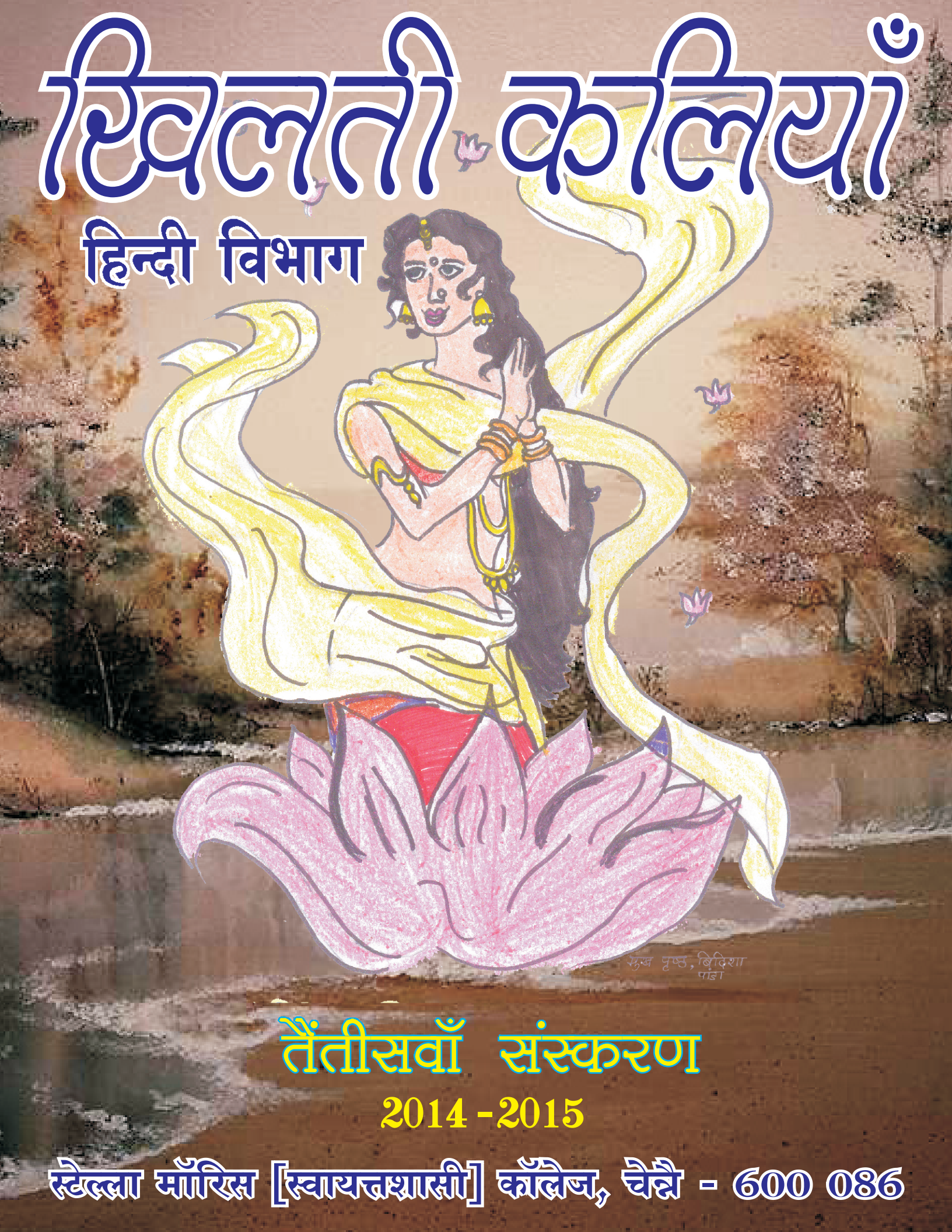

मुख पृष्ठ, बिदिशा पांडा

तैंतीसवाँ संस्करण

2014 - 2015

स्टेल्ला मॉरिस [स्वायत्तशासी] कॉलेज, चेन्नै - 600 086

दो शब्द

विविध रंग विशेषांक

"खिलती कलियाँ" पत्रिका की रचना, हर छात्र में लेखन-कला को जागृत करने के लिए की जाती है। जिस प्रकार कली के प्रस्फुटन पर फूल के मनमोहक रंगों का आभास होता है, उसी प्रकार आपकी रचनाओं से आपके शक्तिशाली व्यक्तित्व का आभास हो, आप कलियों की भाँति खिलती हुई जग के उपवन को अपनी उज्ज्वल कला से महकाएँ।

स्वायत्तशासी पाठ्यक्रम के अन्तर्गत "खिलती कलियाँ" पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए विशेष हर्ष हो रहा है। गर्व है कि इसका प्रवर्त्तन एक से बढ़कर अनेकों के प्रयत्न से संपन्न हुआ। इसमें युवा मस्तिष्कों की उपज ही नहीं, उनकी अभिलाषाओं एवं विचारों का बेजोड़ संगम है। आशा है भविष्य में यह पत्रिका असंख्य सुन्दर कलियाँ विकसित कराएगी।

तैंतीसवाँ संस्करण
2014-2015

अनुभूति संस्था के पदाधिकारीगण

समरीन वानी	**Samreen Wani**	– *अध्यक्षा*	**President**	**- 13/UHSA/060**
उज्जवल चोपड़ा	**Ujvaal Chopra**	– *उपाध्यक्षा*	**Vice President**	**- 13/UFAA/046**
शोभिता एलिजाबेथ शाजी	**Shobhita Elizabeth Shaji**	– *सचिव*	**Secretary**	**- 13/UECA/071**
जेसपर सिंह	**Jasper Singh**	– *संयुक्त सचिव*	**Joint Secretary**	**- 13/USCA/047**
ऐश्वर्या वेणुगोपाल	**Aishwarya Venugopal**	– *कोषाध्यक्षा*	**Treasurer**	**- 13/UECA/070**
जेमिमाह न्यूटन	**Jemimah Newton**	– *संयुक्त कोषाध्यक्षा*	**Joint Treasurer**	**- 13/UECA/010**

संपादक मंडल

मुख्य संपादक : **जेमिमाह न्यूटन**
सह संपादक : स्वर्णा त्यागी, दीक्षा श्रेयान
करिश्मा के., सुभद्रा एम.
अक्षया के.एन., मेघा राव
आर्वा ए.एल., दिशा वच्छर
आकांक्षा राय, श्रीजीता दे
अनुमिता जॉन, अन्नपूर्णी के.एच.
संतोषी, अपर्णा एस.आर., खदीजा

Editor : **Jemimah Newton**
Asst. Editors : **Swarna Tyagi, Diksha Shriyan Karishmaa K., Subhadra M. Akshaya K.N., Megha Rao, Arwa A.L., Disha Vachher, Akansha Rai, Srijeeta Dey, Anumita John, Annapoorani K.H., Santhoshi, Aparna S.R., Khadija**

मुखपृष्ठ : **कु. बिदिशा पांडा,** केन्द्रीय विद्यालय नं. 2, ताम्बरम

तैंतीसवाँ संस्करण
2014-2015

संपादक के कलम से

लोग कहते हैं कि यह कलम की धार तलवार से भी तेज़ होती है परंतु इस पत्रिका के निर्माण में मैंने देखा है कि यह कलम सिर्फ तेज़ ही नहीं पर विभिन्न लोगों के अनण्य गुणों को दर्शाने का माध्यम है। आगे के पृष्ठों में आप एक अनोखी घटना के गवाह बनने वाले हैं। आप देखने वाले हैं कि कैसे भारत के अन्य क्षेत्रों से विभिन्न भाषाओं व संस्कृतियों को नज़र अंदाज करते हुए इसी हिंदी कलम से एकता व विचित्रता का अनोखा व अमूल्य चित्र रचते हैं। इन सुंदर रचनाओं रूपी इन विभिन्न कलियों ने इस पत्रिका में मन मोहक उद्यान को बसाया है।

कोई भी कार्य अकेले नहीं किया जा सकता है और इसलिए मैं लेखकगण, संपादक मंडल व हमारी अध्यापिकाओं, का उनके अमूल्य योगदान के लिए धन्यवाद करती हूँ। आशा करती हूँ कि इस पत्रिका के पढ़ने से आपको उतनी ही प्रेरणा व खुशी मिलेगी जितना कि हमें इसके संपादन करते हुए मिला।

–JEMIMAH NEWTON
मुख्य संपादक

अनुक्रमणिका

			पृष्ठ संख्या
नारी शिक्षा पर निबन्ध	–13/USCA/010	SANTOSHI HARISH	4
युवा शक्ति और देश की प्रगति	–13/USCA/037	DEFFODIL SWARIS	4
समय का सदुपयोग	–13/UECA/018	SUBHADRA	5
माता-पिता	–13/UECA/008	ARWA	5
कैलाश सत्यार्थी	–13/UECA/069	MEGHA RAO	6
टाइटेनिक	–13/UECA/035	PAVANA VIJAYKUMAR	7
कठिनाई	–13/UECA/066	ANJANA MARIAM GEORGE	7
वैश्विक तापन	–13/UECA/053	UFAQUE ALAM	7
सुनामी	–13/UECA/03	MEERA BHARADWAJ	8
हिम्मत	–13/UECA/065	RESHMA KARTHIK	8
प्रकृति	–13/UZLA/041	JOHNCY JOHN	8
पुराना समय और नया समय	–13/UECA/070	AISHWARYA VENUGOPAL	8
दादी	–13/UECA/067	KAVYA RAMACHANDRAN	9
कुछ हमारा अपना	–13/UECA/046	NEHA B. JAIN	9
2012 दिल्ली सामूहिक बलात्कार मामला	–13/UECA/004	MONICA BLISHA A.	9
चाहते हैं हम	–13/UECA/071	SHOBITA ELIZABETH	10
कविता	–13/UPHA/054	ANNU GARCHA	10
कर्ण	–13/UPHA/048	HRIDAYA VERMA V.	11
एक नदी की आत्मकथा	–13/UPHA/047	NIVEDITHA	11
शिक्षक	–13/USWA/538	L. SAMA VAISHALI	11
कितनी जरूरी है बेटियाँ	–13/USWA/549	K. BINDUSHA	11

			पृष्ठ संख्या
सपने	–13/UELA/047	R.E. GEETHA KIRAN	12
तुम्हारे प्यारे भगवान	–13/UELA/063	DISHA VACHHER	12
गिनेस बुक रिकॉर्ड	–13/UELA/019	PRAGATI J.	13
जीवन एक क्रिकेट मैच की तरह है	–13/UELA/004	JEDIDAH JOSHEM	13
प्रपांतरण	–13/UELA/036	SRIJEETA DEY	13
जाने क्या मैं दृढ़ रही हूँ।	–13/UHSA/063	SWATI PANDEY	14
धर्म या अधर्म	–13/UHSA/032	AMISHA ANTONY	14
हमारे पेड़	–13/UHSA/010	SRUTHI SURESH	14
देश	–13/UHSA/049	SHRUTHY K.S.	15
एक चेहरा	–13/UHSA/073	AKANKSHA RAI	15
ये पल	–13/UHSA/039	BATUL MANSOOR	15
पिता	–13/UBTA/011	S. PAVITHRA	15
बड़ी लम्बी जुदाई	–13/UBTA/018	RESHMA B.	16
क्या सब मैं कर रहा हूँ	–13/UELA/051	TINA E.	16
आज के रिश्ते नाते	–13/UZLA/019	APRAJITHA HEMBROM	17
प्रकृति की पुकार	–13/UZLA/045	C. YAHAVI	17
बेटी सबसे प्यारी, सबसे न्यारी	–13/UZLA/007	NEHA FATIMA CHOUKE	17
जिन्दगी और जीना	–13/UZLA/053	A. PRATHYUSHA	17
आधुनिक शिक्षा प्रणाली	–13/UZLA/050	LEYA JOSEPH	17
विद्यार्थी जीवन	–13/USCA/067	TAYBA HABIB	18
भ्रष्टाचार	–13/USCA/048	RAMYA UNNIKRISHNAN	19
किताबें	–13/USCA/051	CYNTHIA RAPHAEL	19
क्योंकि सपना है अभी भी	–13/USCA/051	CYNTHIA RAPHAEL	20
परिवार	–13/USCA/005	HASNA JAFFAR	20
नारी की स्थिति	–13/USCA/068	ZAIBA HABIB	20
भारतीयता का एहसास	–13/USCA/061	TAANIA MONA N.	21
नारी	–13/UMTA/513	VIDYA	21
लक्ष्य	–13/UCHA/016	MATILDA THOMAS T.	21
गुरु का महत्व	–13/UMTA/046	SAHEENA	21
क्रान्ति	–13/UECA/010	JEMIMAH NEWTON	22
खोया बचपन	–13/UECA/039	SWARNA SURESH TYAGI	22
बच्चे	–13/UECA/035	RIYA KONGRA	23
माँ की याद	–13/UECA/059	SNEHA SREERAM	23
एक विधवा की आत्मकथा	–13/UECA/056	DIKSHA SHRIYAN	24
ये जिंदगी, वतन के नाम	–13/UPHA/041	RIYA THOMAS	24
जिंदगी	–13/UZLA/040	ROSE MARY PIOUS	24
उनमुक्त सोच	–13/USCA/047	JASPER SINGH	24

नारी शिक्षा पर निबन्ध

कहा गया है जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं। प्राचीन काल से ही नारी को गृह देवी या गृह लक्ष्मी कहा जाता है। प्राचीन समय में नारी शिक्षा पर विशेष बल दिया जाता था। परन्तु मध्यकाल में स्त्रियों की स्थिति दयनीय हो गई। उसका जीवन घर की चार-दीवारी तक सीमित हो गया। स्त्री-पुरुष जीवन रूपी रथ के दो पहिये हैं, इसलिए पुरुष के साथ-साथ स्त्री का भी होना ज़रूरी है।

यदि माता सुशिक्षित हुई तो उसकी संतान भी सुशील और शिक्षित होगी। शिक्षित गृहिणी पति के कार्यों में हाथ बटा सकती है, परिवार को सुचारू रूप से चला सकती है। स्त्री-शिक्षा प्रसार होने से नारी आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बनेगी। अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति सचेत होगी। स्त्री के लिए किताबी शिक्षा के साथ-साथ नैतिक शिक्षा भी बहुत ज़रूरी है। स्त्री गृह कार्य में कुशल होने के साथ-साथ वह समाज सेवा में भी योगदान दे सके। नारी का योगदान समाज में सबसे ज्यादा होता है। बच्चों के लालन-पालन, शिक्षा से लेकर नौकरी तक नारी हर क्षेत्र में पुरुषों से आगे है। आदर्श गृहिणी परिवार का आभूषण और समाज का गौरव होती है। अतः नारी को कभी कम नहीं आंकना चाहिए और उसका सदा सम्मान करना चाहिए।

Santoshi Harish
–13/USCA/010

युवा शक्ति और देश की प्रगति

देश कौन बनाता है? यह सवाल हम सब के मन में उठता होगा कि देश की उन्नति अथवा प्रगति के लिए काम करना किसकी जिम्मेदारी है। सरकार, नेता, कर्मचारी, मज़दूर, शिक्षक, साधारण नागरिक आदि। यह सभी देश बनाते हैं परन्तु देश को उन्नति की ओर बढ़ाने के लिए उत्साह भरपूर साहस तथा कठिन परिश्रम की आवश्यकता है।

भारत की जनसंख्या में तीस प्रतिशत से ज्यादा लोग बीस से चालीस वर्ष के हैं। यह युवा केहलाते हैं। युवा पीढ़ी के मानसिक, शारीरिक, शक्ति की तुलना किसी दूसरी पीढ़ी से नहीं की जा सकती। इतिहास में कई बार युवाओं ने अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया है। ऐसे कई उदाहरण हैं जहाँ एक युवा या युवाओं ने देश तथा उसके सम्मान की रक्षा की है तथा अपने देश का नाम रोशन किया है। सचिन टेन्डुलकर, विश्वनाथन आनन्द, सानिया मिरज़ा, महेश भूपति, राजीव गाँधी, पी.टी. उषा, राहुल गान्धी, ऐश्वर्या राय, आदि जैसे युवा ने भारत के नाम को रोशन किया है। यह सभी नाम देश को सम्मानित कर भारत के मन को गर्व से भर देते हैं।

देश का भविष्य युवाओं के हाथों में है। जैसी हमारी युवा है, हमारा देश उसी प्रकार का होगा। देश के लिए एक उज्वल भविष्य पाने के लिए हमें अपनी युवा पीढ़ी को उत्साह से भरकर उन्हें शक्तिशाली बनाने की ज़रूरत है। युवावों को अपनी शक्ति पहचानकर उसका प्रयोग सही तरह से भारत की प्रगति के लिए करना चाहिए। भविष्य को बेहतर बनाने के लिए हमें आज के युवा को जागृत करना होगा। जिस राष्ट्र की युवा-शक्ति जागृत होगी, उसे किसी भी प्रकार के शत्रुओं से कोई खतरा नहीं होगा।

अस्वतंत्र भारत को स्वतंत्र करने के लिए भी युवा शक्ति ने स्वयं जागृत होकर सभी देशवासियों के मन में देश भक्ति को जागृत किया था। भारत को स्वतंत्र कराने में सबसे महत्वपूर्ण योगदान युवा-शक्ति का था। अनेक युवा क्रान्तिकारियों ने उस लड़ाई में बलिदान दिया और इसलिए आज हम सब स्वतंत्र देश के वासी हैं।

आजकल की युवा बेफिक्र है तथा अपनी मनमानी करती है। युवा शक्ति के द्वारा देश को सही दृष्टि दिखाने के लिए हमें पहले युवा पीढ़ी को सही दिशा दिखाने की आवश्यकता है। युवा शक्ति में ही किसी भी देश की शक्ति बसी है। स्वस्थ एवम् शिक्षित युवा पीढ़ी स्वयं उच्च मार्ग पर चलते हुए सम्पूर्ण समाज तथा राष्ट्र को कर्तव्य पालन के लिए प्रेरित कर सकती है। घर परिवार तथा समाज में युवाओं को सही मार्ग प्रदर्शन देना आवश्यक है। देश की उन्नति के लिए युवा शक्ति को बचाये रखना तथा उन्हें सही मार्ग की ओर प्रदर्शित करना देश का कर्तव्य है।

Deffodil Swaris
–13/USCA/037

समय का सदुपयोग

"है समय नदी की धारा,
जिसमें सब बह जाया करते हैं।
लेकिन कुछ जन ऐसे होते हैं
जो इतिहास बनाया करते हैं।"

जीवन और समय के बीच में एक गहरा रिश्ता है। समय के मूल्य को प्रत्येक बुद्धिमान मनुष्य ने स्वीकार किया है। जिसने समय के मूल्य को जान लिया है, उसको इस संसार में कोई भी वस्तु असाध्य नहीं हो सकता। हमारा जीवन बहुत अल्प है और वह समय के साथ में घिरा हुआ है। ईश्वर की सारी सृष्टि का निर्माण एवं नाश समय पर ही निर्भर है। समय में महान शक्ति है। वह गिरें हुए को उठा सकता है, निर्बल को सबल बना सकता है।

समय का सदुपयोग कई रीतियों से किया जा सकता है। प्रत्येक मानव को समय का मूल्य समझ लेना चाहिए। गया हुआ समय वापस नहीं आता। किसी अंग्रेज़ी लेखक ने कहा –

"समय की चाँद गंजी होती है, यदि हम उसे सामने से पकड़ लेंगे तो वह हाथ आ जाएगा, नहीं तो बाद में पश्चात्ताप के अतिरिक्त कुछ भी हाथ नहीं लगेगा।"

हम पैसों के विषय में बहुत सोच-विचार करते हैं लेकिन समय को नष्ट करते समय हमें तनिक भी दुःख नहीं होता।

समय के सदुपयोग से मनुष्य का शारीरिक, बौद्धिक एवं मानसिक विकास होता है। शेक्सपियर ने समय के बारे में कहा था।

"मैंने समय को नष्ट किया और अब समय मुझे नष्ट कर रहा है।" यह सच नहीं है कि हम समय को प्रभावी ढंग से उपयोग नहीं करते। हमें जो कुछ समय प्राप्त हुआ है उसका सदुपयोग हम नहीं करते हैं। शायद हम यह भूल जाते हैं कि प्रत्येक क्षण में मृत्यु के मुँह की ओर ले जा रहा है।

समय के सदुपयोग करनेवाले मनुष्य जीवन में सुख और शान्ति प्राप्त करते हैं। विवेक-शक्ति जागृत होती है। चित्त को असीम आनन्द प्राप्त होता है। विश्व-इतिहास में समय का मूल्य पहचाननेवाले अनेक महापुरुषों की गाथाएँ स्वर्णाक्षरों में अंकित है। महात्मा गाँधी, पण्डित जवहरलाल नेहरू आदि महापुरुषों हमारे देश के रत्न हैं जिन्होंने समय का सदुपयोग करना अनिवार्य समझा है।

कबीरदास के शब्दों में –

"काल करै सो आज कर, आज करै सो अब
पल में परलै होयगी, बहुरी करेगा कब।।"

आज के वैज्ञानिक युग में समय की बचत के लिए अनेक सुविधाएँ उपलब्ध है पर हम उनसे समय की बचत करने की जगह समय का अधिक दुरुपयोग करते हैं।

"समय का नाश का अर्थ है जीवन का नाश"

Subhadra
–13/UECA/018

माता-पिता

माता पिता
ईश्वर की अमानत हैं
जो हमारे जीवन की अमृत-धार हैं
आपसे ही हमारी पहचान है
वरना हम इस दुनिया में अनाथ हैं।
आपके आदर्शों पर चलकर ही,
हर मुसीबतों का डटकर सामना करना सीखा।
आपने ही तो इस दुनिया के दहलीज़ पर,
उंगली थामा और चलना सिखाया,
वरना एक कदम भी चल पाना मुश्किल होता।
आपके प्यार और विश्वास ने काबिल बनाया है हमें
जीवन के हर मोड़ पर आज़माया है हमें
जब हम जीवन की चुनौतियों से परेशान थे,
आपने हमेशा हर कदम पर सही राह दिखाया
अच्छे और बुरे की पहचान करायी।
आपके परवरिश ने हमें नेक राह दिखायी,
हमें इस दुनिया के काबिल बनाया,
आपसे ही हमारे जीवन की शुरुआत है,
आप ही हमारे जीवन का आधार हैं,
आप से यह जीवन साकार है,
आप नहीं तो हम नहीं
क्योंकि आपसे ही हैं हम।

Arwa
–13/UECA/008

कैलाश सत्यार्थी

मदर थेरेसा के बाद कैलाश सत्यार्थी दूसरे साहसी और वीर हिन्दुस्तानी है जिन्हें नोबेल पीस पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्होंने 26 साल की उम्र से अपनी पूरी जिन्दगी बाल मजदूर के खिलाफ लड़ने में समर्पित कर दिया। बचपन में एक घटना के कारण सत्यार्थी जी ने अपनी पूरी जी जान इस कार्य में लगा दी। कैलाश जी हर सुबह पाठशाला जाते थे तब वह अपने उम्र के एक लड़के को मोची का काम करते हुए देखते थे। कैलाश जी ने अपने घर के बड़ों से पूछा ऐसे क्यों है कि कुछ बच्चों को शिक्षा का अभिगम है और कुछ बच्चों को नहीं। वह सोच के पिता से यह पूछने पर उन्होंने जवाब दिया कि यह काम करने के लिए ही वे पैदा हुए।

महात्मा गाँधी जी द्वारा मार्ग में चलते हुए कैलाश जी ने अपने इलक्ट्रिकल इंजिनियरिंग के व्यवसाय को पीछे छोड़ने का और बाल श्रम में पीड़ित बच्चों की सहायता करने का निर्णय लिया। बाल श्रम हिन्दुस्तान में एक गंभीर समस्या और अपराध है। हजारों बच्चों को भ्रष्ट व्यापारियों और जमींदारों द्वारा मजदूर करने के लिए मजबूर किया जाता है। कैलाश जी का मानना है कि हमें जल्दी इसके खिलाफ प्रतिबन्ध लागु करना चाहिए और बच्चों को अनिवार्य शिक्षा प्रबन्ध करना चाहिए।

कैलाश जी बंधुआ श्रम लिबरेशन फ्रंट के महासचिव थे। 1980 में उन्होंने बचपन बचाओं आंदोलन शुरु किया। इसका प्रमुख उद्देश्य था कारखानों में छापा मारना और बच्चों को बचाना।

बचपन बचाओं आंदोलन कार्यकर्ता पुलिस की सहायता से बालश्रम करनेवाले कारखानों में पहुँच जाते थे। काफी कारखानों में हथियारबंद चौकीदार प्रस्तुत होते थे, जिसके कारण सत्यार्थी जी का काम खतरनाक जोखिम भरा और अत्यंत साहसी था। दोषी संघटनों में से कुछ थे हिरा खनिक, गलिचा और कालीन निर्माताएँ और फुटबाल फार्मा। बी बी ए द्वारा उन्होंने लगभग 80,000 बच्चों को बचाया। उनकी मुक्ति के बाद कैलाश जी का कर्तव्य था कि वह इन बच्चों को नए अवसर प्रदान करे और इसलिए राजस्थान की ओर कदम बढ़ाया। सत्यार्थी जी ने बाल ग्राम नामक योजना शुरू की ताकी बालश्रम का खत्म करने के लिए भारतीय गाँवों को प्रोत्साहित किया जाए। इसका मुख्य उद्देश्य था कि पूरे समुदाय में किसी भी बच्चे को काम न करना पड़े और सभी बच्चे शिक्षा प्राप्त करने के लिए विद्यालय जाए।

कैलाश जी उपभोक्ताओ के बीच जागरूकता पैदा करना चाहते थे कि दक्षिण एशिया में काफी गलीचे और कालीन बालाश्रम के उपयोग द्वारा निर्मित किए जाते हैं। उन्होंने पूर्वी उत्तर प्रदेश में कालीन फार्मा पर छापा मारा जहाँ बच्चों को अंधेरे गरीब झोपड़ियों में मजदूरी कराया जाता था। एगमार्क नामक कार्यक्रम कैलाश जी ने शुरू किया जिसमें कालीन का नियमित रूप में निरीक्षण किया जाता है। यह प्रक्रिया बच्चों द्वारा बनाए गए फुटबाल उत्पादनों के लिए भी की गई थी। इस प्रकार गलीचा और कलीन उद्योग ने बाल श्रम बंद कर दिया।

कैलाश जी ने हमेशा मौत की धमकियों और कैद की यातनाओं का मुकाबला किया किंतु अपने मिशन से नहीं हटे। उनके दो सहभागियों को हत्या भी कर दी गई। परंतु उनका मानना है कि किसी को तो यह चुनौती स्वीकार करनी ही थी चाहे कितनी भी मुश्किलें क्यों न हो। वे अक्सर बेइमान बिचौलियों द्वारा धमकाए गए थे जो कपड़ा कारखानों में काम करने के लिए बच्चों का अपहरण करते हैं। राजस्थान में पत्थर खदानों से बच्चों का बचाव करते हुए वे बुरी तरह घायल हुए। सत्यार्थी जी ने 2012 में एक नए कानून के लिए आंदोलन का नेतृत्व किया। यह कानून 14 से कम आयु के बच्चों का रोजगार अवैध सुनिश्चित करता है। 18 साल की उम्र तक खतरनाक बाल श्रम पर प्रतिबंध लगाता है। वह इस कानून को अपनी सबसे बड़ी जीत मानते हैं। 70 देशों ने बाल श्रम से लड़ने के लिए अंतराष्ट्रीय कानून पारित किया है। कई माता पिता कहते हैं कि गरीबी के कारण वह अपने बच्चों से काम करवाते हैं। कैलाश जी का कहना है कि बच्चे अशिक्षित केवल माता पिता की गरीबी के कारण हैं। उनकी अज्ञानता और विकास कार्यक्रम की विफलता के कारण काम करने पर मजबूर नहीं किए जाते परंतु नियोक्ताओं के लिए बच्चे सबसे सस्ते विकल्प का रूप है। देश में बाल श्रमिकों की बड़ी संख्या बेरोकटोक भ्रष्टाचार और काला धन दर्शाती है।

महान व्यक्तिगत साहस पेश करते हुए और गाँधी की परंपराओं को बनाए रखते हुए कैलाश जी ने वित्तीय लाभ के लिए बच्चों के शोषण पर ध्यान केंद्रित कर विरोध और प्रदर्शनों के विभिन्न रूपों को शान्तिपूर्ण अध्यक्षता से किया है। सत्यार्थी जी ने नागरिक एकता मार्च में हिस्सा लिया था जो 1984 के सीख दंगों के पीड़ितों के न्याय के लिए लड़ रहे थे।

हमारे देश में मसौदा तैयार करने में और श्रम कानून के कार्यान्वयन के बीच एक बड़ा अंतर है। बाल श्रम की कुल उन्मूलन के बिना शिक्षा असंभव है। अपने जीवनकाल में सत्यार्थी जी यह देखना चाहते हैं कि बाल श्रम का अंत एवं विनाश हो जाए और आनेवाली पीढ़ी इसे सिर्फ इतिहास की पुस्तकों में पढ़े।

Megha Rao
–13/UECA/069

टाइटेनिक

आर.एम.एस. टाइटेनिक, दुनिया का सबसे बड़ा यात्री जहाज़ था। वह साउथम्पटन (इंग्लैंड) से अपनी प्रथम यात्रा पर 10 अप्रैल 1912 को रवाना हुआ। चार दिन की यात्रा के बाद 14 अप्रैल 1912 को वह एक हिमसिला से टकरा कर डूब गया था। इसके कारण 1,517 लोगों की मृत्यु हुई जो इतिहास के सबसे बड़ी शांतिकाल समुद्री आपदाओं में से एक है। टाइटेनिक 2,223 यात्रियों के साथ न्यूयार्क शहर के लिए रवाना हुई थी। यह तथ्य है कि जब जहाज डूबा, उस वक्त जहाज़ पर, उस समय के सभी नियमों का पालन करने के बावजूद केवल 1,178 लोगों के लिए जीवनरक्षक नौकाएँ थी। पुरुषों के मृत्यु की असंगत संख्या का मुख्य कारण महिलाओं और बच्चों को पहले प्रधानता देना था। यह कई लोगों के लिए एक बड़ा आघात था कि व्यापक सुरक्षा और सुविधाओं के बावजूद टाइटेनिक डूब गया था। घटना होने के चार घंटे बाद जीवनरक्षक नौका उस जगह पर पहुँचा लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। एक या दो के अलावा बाकी सब ठंड में मर गये थे। यह घटना 11.37 pm को हुआ और टाइटैनिक 00.40 am को पूरा पानी में डूब गया। टाइटेनिक के बारे में सुनकर हम सब को सिर्फ वो सिनेमा और रोस एवं जेक की प्रेम कहानी याद आती है। उन्हें देखकर आज भी हज़ारों लोगों के आँखों से पानी निकलता है। लेकिन उन दोनों के अलावा हज़ार और लोग भी उस रात मरे थे। यह घटना के बाद हमें यह सीख मिलती है कि जिन्दगी में कभी भी कुछ भी हो सकता है। अतः हमें हर पल खुशी से बिताना चाहिए।

Pavana Vijaykumar
–13/UECA/035

कठिनाई

सभी के जीवन में आता है कठिन समय,
नहीं करना हमें इन कठिनाइयों का भय।
कठिनाई को बनाना अपना शास्त्र जीवन में,
खुशी हो या गम, सफल होंगे हम हर मकसद में।।
मेहनत का फल मीठा होता है,
एक आसान जीत को, कोई याद तक नहीं रखता है।
कठिन शब्द ही है, इतनी कठिनाइयों से भरा,
जो निडर होकर इसका सामना करे, वही उतरेगा खरा।।

Anjana Mariam George
–13/UECA/066

वैश्विक तापन

चिलचिलाती धूप से तन-बदन जल रहा था
धू-धू कर सुलगती थीं दिशाएँ, धरती-आकाश सब जैसे उबल रहा था।
जितना मुमकिन था-आवाज़ में उतनी नरमाहट लाकर मैं सूरज से बोला।
हे सूरज जी, क्यों होते हैं इतने आग-बबूला
क्यों-हैं खफा? क्षमा करें यदि त्रुटियाँ हुई है कोई भटके-भूले।
सूरज पर मेरी अनुनय विनय का कुछ भी असर नहीं पड़ा।
सबको झुलसाता हुआ वह वैसे ही रहा अड़ा।
तब सिर झुकाकर, हाथ जोड़कर मैंने कहा-
आप तो दिन बनाते हैं हे दिनकर,
फिर इन्सानो के दिन-रात बिगाड़ने पर तुले हैं आखिर क्यों कर?
रवि जी गुस्से में तमककर बोले, उनकी वाणी में भड़क रहे थे रोगे
अब आई है अकल ठिकाने
इतने दिन से गई थी क्या घास खाने?
सदियों से धरती पर इतने अत्याचार कर, उसका सर्वस्व हर रहे हो।
क्या कभी सोचा कि मेरी बेटी बेटी का क्या हाल कर रहे हो?
एक एक कर उसकी सारी सुन्दरता नष्ट कर डाली।
पिघलाया हिम-शिखरों, ध्रुवों और हिमनदों को, काटे वन।
तहस-नहस कर दी सब हरियाली।
कभी सोचा कि अपनी पुत्री का दुःख मुझसे कैसे देखा जाएगा?
मेरी बेटी धरती को श्रीहीन करने वाले, ओ रे दुष्ट, मानव,
अब ज़रा सोच कि तुझे मेरे ताप से कौन बचाएगा।
सूरज की तपिश का राज़ मेरी समझ में आया।
मैं सिर धुन-धुनकर बहुत पछताया।
न था कहीं शुद्ध जल, न ठंडी हवा, न किसी पेड़ की छाया।
हाथ रे दैव, हम इन्सानों ने अपनी माँ धरती का यह क्या हाल है बनाया।।

Ufaque Alam
–13/UECA/053

सुनामी

आओ सुनाऊँ एक सच्ची कहानी,
जिसमें मचीं थी सिर्फ तबाही।
वह न कोई इन्सान था,
न कोई काली परछायी,
वह तो थी एक समुद्री लहर 'सुनामी'
अचानक एक दिन आया यह कहर
जिसे हम कहते हैं समुद्री लहर,
जिसमें कितना की जिन्दगी गई ठहर।
कितने थे घर से लापता,
कितनों ने तोड़ा ज़िन्दगी से नाता
भयानक होती गई इसकी कहानी,
काँप उठते थे सुनते ही नाम 'सुनामी'।
कितनों ने खोया माँ-बाप
कितनों ने खोया अपना ख्वाब
न जाने कहाँ खो गई संसार की खुशी,
चारों ओर सिर्फ दुःख और मायूसी।
भगवान करे सुनामी फिर न आए,
हमारी हँसी, खुशी वापस लौट आए।

Meera Bharadwaj
–13/UECA/03

हिम्मत

करो हिम्मत तो आसमान छू जाओगे
करो कठिन परिश्रम तो दुनिया को जीत जाओगे
देखो बगुले का एक पैर पर तप
देखो चींटी का अविरल प्रयत्न
चढ़कर गिरना गिरकर चढ़ना
देखो चंचल सरिता का बहता जल
एक नई उम्मीद से भर जाओगे
करो हिम्मत तो आसमान छू जाओगे
मत बनो किंकर्तव्यविमूढ़ तुम
विश्वास का डालो जाल सब पर तुम
प्रेम की ज्योति जलाओ मीरा की तरह तुम
सहिष्णु बन जाओ गाँधी की तरह तुम
लक्ष्य साधो अर्जुन की तरह तुम
पथ कंटीला आएगा पार कर दिखलाओगे
कर्मवीर तुम बन जाओगे
करो हिम्मत तो आसमान छू जाओगे।

Reshma Karthik
–13/UECA/065

प्रकृति

कितनी सुन्दर है यह प्रकृति
देती है हमको वरदान
दुष्ट मानव के हेतु ही
कर देती सब कुछ बलिदान
दिये इसी ने सबको सुख
बदले में देते इसको दुख।
नहीं जानता भविष्य क्या होगा
स्वयं सभी को ले डूबेगा।
प्रकृति, है पेड़ों की झुरमुट
छाँह सभी को देती है।
इसके मन में न जाती भाव
मानव में इसी गुण के हैं अभाव
पाता अच्छी सीख उन्हीं से
पर न होता ग्रहण मानव से
न जाने कब सुधरेगा
प्रकृति की पहचान अपनाएगा।

Johncy John
–13/UZLA/041

पुराना समय और नया समय

हाय मनुष्य! समय के साथ तू कितना बदल गया
प्राचीन काल को तूने आधुनिक युग में बदल दिया।
था वो एक समय जहाँ माता पिता का होता था सम्मान
आज औलाद समझती है उन्हें घर का पुराना सामान।
पहले था एक बड़ा सा प्यारा संयुक्त परिवार
अब बड़ा परिवार लगे जैसे भीड़ भरा बाज़ार।
करते थे पहले बच्चे बूढ़े प्रकृति से दुलार
पर आज है बच्चे-बच्चे को एम पी थ्री से प्यार।
दादा-दादी पहले सुनाते थे परियों की कहानी
अब वे ही देखे बच्चों के साथ घर-घर की कहानी।
पहले था छोटे बड़ों को तन, ढकने का पैशन,
अब तो हर जगह दिखता है कम कपड़ों का फैशन।
पहले था छोटों के दिलों में बड़ों की डाँट का डर
आजकल निकल आए छोटों में बैखौफी के पर।

Aishwarya Venugopal
–13/UECA/070

दादी

दादी माँ का क्या कहना है,
सोने-चाँदी का गहना है,
दया-धर्म की सूरत है दादी,
ममता की मूरत है दादी,
अनुभव की मठरी है दादी,
जीवन की पटरी है दादी।
माना उसकी उम्र पक्की है,
लेकिन दादी नहीं थकी है।
धीरे-धीरे चलती है दादी,
पूरे घर का हाथ बँटाती,
जी भर सब पर स्नेह लुटाती।
दादी से घर है, घर दादी से,
प्यार भरी पिचकारी दादी,
लगती माँ से प्यारी दादी।

Kavya Ramachandran
–13/UECA/067

कुछ हमारा अपना

गाँधी ने जँजीरो को तोड़कर भारत माँ को आज़ाद किया।
और तुमने आज उसी भारत माँ को गंदा किया।
जब तुम्हारे खुद के दरवाज़े कि सीढ़ियाँ गंदी है,
तो पड़ोसी की छत पर गंदगी का उलाहना मत दीजिए
स्वच्छता का दीप जलाए चारों ओर उजाला फैलाए।
हमने अपने पाँव ग्रह तक पहुँचाएँ।
तो इस बार अपने हाथ स्वच्छता की ओर बढ़ाए,
हम सब कहीं पर भी हो, सब एक जुट को जाए
क्योंकि अनेकता में एकता ही हमारी शान है,
भारत माँ को साफ रखना भी हमारा अभियान है।
अब सिर्फ चाहिए तुम्हारा जोश
क्योंकि जहां स्वच्छता वहाँ सोच।

Neha B. Jain
–13/UECA/046

2012 दिल्ली सामूहिक बलात्कार मामला

आज़ादी से पहले भारत में स्त्री को पुरुष की तरह मर्यादा नहीं मिलती थी। वह पुरुष लोग के गुलाम थे। लेकिन आज़ादी के बाद कई स्त्री नेत्री पुरुष के समान रह चुकी है। आजकल स्त्रियाँ कई विभागों में काम करती हैं। लेकिन स्त्रियों पर अत्याचार कई स्थानों में कई वर्षों से चल रहा है। इसका एक उदाहरण दिल्ली में हुई बलात्कार की घटना है। यह दुखःमय घटना हमारे देश की राजधानी में हुई।

2012 दिल्ली सामूहिक बलात्कार मामला भारत की राजधानी में 16 दिसम्बर में घटा। इस भयानक घटना ने पूरे देश को हिलाकर रख दिया था। एक लड़की अपने पुरुष मित्र के साथ 16 दिसम्बर, 2012 की रात को बस से सफर कर रही थी। उस बस के निर्वाहक, मार्जक और उसके अन्य साथियों ने मिलकर उस पुरुष मित्र को पहले गाली दी और जब उन दोनों ने उसका विरोध किया तो उन्हें बुरी तरह पीटा गया। उसके पश्चात् पुरुष बेहोश हो गया और उस लड़की के साथ बलात्कार करने की कोशिश की गई। उस लड़की ने बहादुरी के साथ उनका डटकर विरोध किया पर जब वह प्रयत्न करते-करते थक गई तब उन लोगों ने उसे बेहोशी के हालत में बलात्कार करने की कोशिश की गई। परंतु सफल न होने पर, उन्होंने लड़की एवं उसके अंतर अंगों को बुरी तरह क्षतिग्रस्त कर दिया। बाद में उन्होंने लड़की एवं उसके दोस्त को नीचे फैंककर भाग गए। बहुत मुश्किल से उन्हें दिल्ली के सफदरजंग अस्पताल में ले जाया गया। उस लड़की की शारीरिक हालात में कोई सुधार न होते देख उसे सिंगापूर ले जाने पर भी कोई फल नहीं प्राप्त हुआ। 29 दिसम्बर 2012 को उसकी मृत्यु हो गई।

इस घटना ने पूरी दुनिया में जागरूकता फैला दिया। पूरा देश उस लड़की के लिए इंसाफ दिलाना चाहता था। सभी प्रार्थना कर रहे थे कि वह ठीक हो जाए। उन चार आदमियों को सजा दिलाना सभी का मक़सद बन गया। इसे भारत के मुख्य घटनाओं में से एक माना जाता है। देश-विदेश में इसी घटना की चर्चा हो रही थी। लेकिन इसके बावजूद हम रात में बिना डर के सड़क पर चल सकते है? आज भी एक आदमी के लिए औरत एक खिलौना है। हज़ारों लड़कियाँ आज भी अत्याचार सहतीं है। इसका अंत शायद कभी नहीं हो सकता है। क्या एक लड़की होना इतनी बुरी बात है कि हमें उसकी ऐसी सजा मिल रही है? इसका एक ही उपाय हो सकता है। सज़ा कठिन हो तो अपराध कम हो सकती है।

Monica Blisha A.
–13/UECA/004

चाहते हैं हम

आत्माओं जैसे भटकते हैं हम
एक चिंगारी की खोज में,
जो अलग करे हमें
इस उत्तम भीड़ से।
कल्पनाओं से मुलाकात
और दिलों को जीतना,
चाहते हैं हम और
किसी के बीच स्वीकार होता।
निराशा के अनेक है विचार
जिनका मरम्मत करता है
बंधे हैं हम,
गन्दी सोच के बीच।
इस चरण भी होंगे समाप्त
जैसे दूसरों का हो चुके हैं,
इसी उम्मीद के साथ
कदम उठाते हैं सफलता की ओर।
बहुत सारे सपने
और खूब सारे विश्वास के संग
बढ़ते हैं हम आगे
न अतीत के साथ।

Shobita Elizabeth
–13/UECA/071

कविता

दादी माँ मेरी प्यारी प्यारी,
मुझको कहती राजकुमारी।
अच्छी -अच्छी बातें कहती,
मैं रूठूं तो मुझे मनाती।
नए-नए पकवान खिलाती,
फल खिलाती, दूध पिलाती।
रंग बिरंगे ड्रेस दिलाती,
मंदिर व पार्क ले जाती।
मम्मी के गुस्से से बचाती,
अपनी गोद में मुझे सुलाती
घोड़ा-हाथी बनके घुमाती
नित नई कहानी सुनाती।
खेल-खेल में मुझे पढ़ाती,
भले-बुरे का भेद बताती,
ऐसी मेरी प्यारी दादी।

Annu Garcha
–13/UPHA/054

कर्ण

कर्ण महाभारत के अनेक मुख्य पात्रों में से एक है। उनके जीवन से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं।

कर्ण की माँ कुन्ती थी। कुन्ती ने पांडु से विवाह करने से पहले कर्ण को जन्म दिया था। वास्तविकता में वह सूर्य-पुत्र है। लेकिन कर्ण के वास्तविक माता और पिता उसको गोद लेने के लिए तैयार नहीं थे क्योंकि कुन्ती अविवाहित थी। इस कारण से उन्होंने कर्ण को एक बक्से में रखकर गंगा में बहा दिया।

धृतराष्ट्र के सारथी अधिरत और उसकी पत्नी राधा गंगा में बहती आई इस बच्चे को गोद ले लिया। कुमार कर्ण की रुचि रथ चलाने की बजाय युद्धकला में था। इसलिए वह उस कला की शिक्षा के लिए द्रोणाचार्य के पास गया जो उनको शिक्षा देने से मना कर दिया क्योंकि वे सिर्फ़ क्षत्रियों को सिखाते थे। निराश होकर फिर कर्ण ऋषि परशुराम के पास गया जो केवल ब्राह्मण को शिक्षा देते थे। अतः कर्ण अपने-आप को ब्राह्मण का प्रस्तावना देकर ऋषि परशुराम का अत्यंत परिश्रमी शिष्य बना।

जब द्रोणाचार्य के शिष्यों की शिक्षा का पूर्ति हुआ उन्होंने एक टूर्नमेंट का आयोजन किया जिसमें कर्ण आया और अर्जुन द्वारा किए गये साहसिक कार्य आसानी से करने के बाद उसको एक मल्लयुद्ध के लिए चुनौती दी। लेकिन वहाँ के लोग ने उस सुत-पुत्र को अपमानित किया। उस समय दुर्योधन ने उसका साथ लिया और उसका सबसे प्रिय मित्र बना। तब से अंत तक कर्ण दुर्योदन का सबसे निष्ठावान और सच्चा मित्र रहा। उसी समय आरंभ हुआ कर्ण का अर्जुन के प्रति घृणा।

कर्ण को कई और अपमान भी सहना पड़ा था जैसे कि द्रौपदी के स्वयंवर के अवसर पर जब कर्ण शिव के धनुष को मोड़ने में समर्थ होने पर भी द्रौपदी ने उसका इनकार किया। उस अपमान के कारण ही कर्ण ने दुशासन को द्रौपदी के वस्त्रापहरण करने के लिए प्रेरित किया। ऐसी थी कर्ण की पांडव और पांचाली के प्रति नफ़रत।

कर्ण के सर्वोत्तम और प्रचलित गुण उनकी दानशीलता है। उनकी उदारता इतना है कि जब इंद्र देव ने महायुद्ध के पहले उनका कवच और कुंडली (जो उनको सूर्य देव ने जन्म से प्रदान किया था और उनको युद्ध में सुरक्षित रखता था।) उनसे माँगा, वह उसे अपने शरीर से छीनकर इंद्र को दे दिया। जो भी कर्ण से कुछ अनुरोध करते थे, कर्ण उसे वह देते थे।

अंत में महाभारत के महायुद्ध के पहले ही वे जान लेते हैं कि वह असल में कुन्ती का बेटा, पांडवों के बड़ा भाई है और

हस्तिनापुर के राजा बनने के लिए सबसे योग्य है। अतः कृष्ण जी और कुन्ती उनसे प्रार्थना किया कि वह उस युद्ध को आरंभ होने से पहले ही समाप्त करें। किंतु उनके दुर्योधन और अपने पालक माता-पिता के प्रति भक्ति इतना गंभीर है कि वे अपने भाईयों से युद्ध करने के लिए भी तैयार थे। लेकिन वह किसी का इनकार भी नहीं करना चाहता था। इसलिए वह कुन्ती को वादा देता है कि वह पांडवों में केवल अर्जुन को मारेगा ताकि कुन्ती को पाँच पुत्र बाकि रहें।

कर्ण की असाधारण और गंभीर दानशीलता के साथ उनकी सच्चाई, वीरता और ईमानदारी के कारण ही मैं मानती हूँ कि कर्ण ही महाभारत के सर्वोत्तम पात्र और राजा है।

Hridaya Verma V.
–13/UPHA/048

एक नदी की आत्मकथा

एक बूँद से शुरू होती है मेरी यह लंबी कहानी।
धधकते सूरज में मैं पिघला
सफेद समुद्र के बीच।
देवताओं के निवास में मैंने अपनी यह दीर्घ सैर शुभारंभ की।
हर एक बूँद एकत्र होकर,
बना एक सौम्य धारा
शांत एवं साफ
थके तीर्थयात्रियों का अमृत हूँ।
फिर एक तेज़ धारा बनी,
सजीव चुहल से भरा।
शीघ्र ही मैं बन जाती एक गर्जन नदी।
मानव बस्तियों के अतीत बहती,
पवित्र स्थानों के इर्द-गिर्द चलती,
शायद इसलिए मुझे भी पवित्र मानते हैं।
मेरी जवानी एक जीवंत तस्वीर,
जो समय के रेत पर लिखा हैं।
मैं ग्रोव के अतीत बहती,
उसके जड़ों-जैसे मकड़ी धीमी करते है मेरी गती को।
धीरे-धीरे मैं अंतहीन महासगरों में मिश्रण हो जाती।
पर यह "The End" नहीं हैं।
अंग्रेजी में एक कहावत है।
"Life is never ending circle"
और मेरी जीवन भी एक चक्र है।
पिक्चर अभी बाकी है मेरे दोस्त।

Niveditha
–13/UPHA/047

शिक्षक

माता देती नवजीवन
पिता सुरक्षा करते है
लेकिन सच्ची मानवता
शिक्षक जीवन में भरते हैं।
सत्य न्याय के पथ पर चलना
शिक्षक हमें बताते हैं।
जीवन संघर्ष में लड़ना
शिक्षक हमें सिखाते हैं।
ज्ञान दीप हमें सिखाते हैं।
मन आलोकित करते हैं
विद्या का धन देकर शिक्षक
जीवन सुख से भराते हैं।
यह कबीर बतलाते है
सही मार्ग सिखाकर शिक्षक
ईश्वर तक पहुँचाते है।
जीवन में कुछ पाता है।
तो शिक्षक को सम्मान करो
शीश झुकाकर श्रद्धा से
तुम बच्चों उन्हें प्रणाम करों।

L. Sama Vaishali
–13/USWA/538

कितनी जरूरी है बेटियाँ

आँसुओं की बूँद है बेटियाँ
कल्पना सी कोमल होती है बेटियाँ
रोशन करेगा बेटा बस एक ही कुल को
दो-दो कुल की आईना होती है बेटियाँ।
कोई कम नहीं है इसमें एक दूसरे से
बेटा अगर हीरा है तो,
मोती से भी बढ़कर होती है बेटियाँ।
काँटों की राह पर चलना भी है मंजूर
दूसरों के लिए फूल सदा बोती है बेटियाँ।
विधी का विधान है।
यही रस्मे भरी दुनिया है
मुट्ठी से भरे नीर सी होती है बेटियाँ।
सवाल क्षमता का हो या कर्तव्य की बात हो
आज सजग हर काम में दिखती है बेटियाँ

बेटा अगर हीरा है तो,
मोती से बढ़कर होती है बेटियाँ।

K. Bindusha
–13/USWA/549

सपने

कुछ सपनों को जो पंख दिए।
वो खुले आसमान में उड़ने लगे,
बादलों की छाँव मिले,
तो कभी तारों की महफिल सजी।
नरम-नरम हवा के पालनों में पलने लगे,
कारे-कारे थे सपने रंगों से खेलने लगे,
सुनहरी धूप की धागों से एक नया
जहाँ बुनते हुए,
बिखरे, बिखरे यह अपने अपने-आप में ही
सिमटने लगे।
चलते-चलते खो गये
अपनी ही धड़कन से दूर हो गए,
क्योंकि टिमटिमा रहा था अभी एक
सपना सितारा बन के।

R.E. Geetha Kiran
–13/UELA/047

तुम्हारे प्यारे भगवान

इन छुट्टियों में मैं दक्षिण भारत के प्रमुख तीर्थ स्थानों पर गई थी और मुझे भगवान के घर तक जाकर सुख और खुशी नहीं मिली बल्कि धर्म का कैसे व्यापारीकरण हो चुका है ये देखकर बहुत दुख हुआ। सब भगवान से मिलने के लिए उत्सुक नहीं थे बल्कि उनसे सबसे अच्छी डील लेने के लिए थे। जिसके पास पैसा है वो ही भगवान के दर्शन पाने का हकदार है। हर तीर्थ स्थल पर स्पेशल लाईन है जहाँ आप ज्यादा पैसे देकर आराम से लम्बे समय तक दर्शन पा सकते हैं। जैसे की भगवान इन स्पेशल लाईन वाले लोगों को ज्यादा देर उसे देख पाने से इन्हें भगवान का ज्यादा प्यार मिलेगा। तीर्थ पे जाना धार्मिक कार्य नहीं बल्कि बहुत मुश्किल, जुगाड़ और पैसे वाला काम हो गया है। यह बात रहती है कि लाईन में आगे कैसे बढ़ूँ, मूर्ती के पास जल्दी कैसे पहुँचूँ। अगर आज भगवान हमसे कुछ बोल सकते तो वह ज़रूर कुछ यही बोलते की आँखें खोल रे अंधे इन्सान मैंने अपनी कविता 'तुम्हारे प्यारे भगवान' इसी सोच से लिखी है।

तुम्हारे प्यारे भगवान

क्यूँ तूने है तीर्थ पुजाए?
क्यूँ तूने है मूरत सजाए?
क्यूँ गया तू मंदिर मस्जिद में?
क्यूँ चीख-चीख मेरे गुण गाए?
क्यूँ मेरे साने हजारों चढ़ा गया,
पर बाहर खड़े झिकारी को दो पैसे देने से कतरा गया।
क्यूँ प्रसाद में सूजी का डलवा है बनाया
और बूढ़ी कामवाली को एक और घंटे रुकवाया?
क्या मैं जीनता नहीं कि धर्म एक धंधा रह गया,
मेरा दर्शन एक "पैकेज डील" बन गया।
आइए-आइए सिर्फ एक घंटे में स्वयं प्रभु के दर्शन पाइए
अब थोड़े और पैसे में स्पेशल प्रसाद भी घर ले जाईए।
आज मैं सचमुच हर जगह हूँ चित्रों में, सीडी में, कंगनों में, घरों में
ना कि फूलों में, पत्तों में, पक्षियों में, दुखियारों में।
मेरी एक झलक के लिए घंटों से लाईन में खड़ा,
अरे, तूने मेरे आँगन में जैसे ही प्रवेश किया मैंने तुझे देख लिया।
तेरी सारी इच्छाएँ, सारे दर्द, सारे डर दुख से वाकिफ हूँ,
मैं क्या तुझे एक घंटे में प्रसाद साथ दर्शन हूँ।
रुक, बैठ, घंटों बात करना चाहता हूँ तुझसे,
चुप-चाप सुनूँगा, कुछ बोल तो मुझसे।
चाहे ना मिलने आ मंदिर मस्जिद में,
मुझे मन में रख, सब दुख-बोझ दे दे अपने।
तेरे लिए मेरा प्यार तू खरीद नहीं पाएगा,
तो कोशिश मत कर, पैसा नहीं, प्यार मुझे लुभाएगा।
तू साल में एक बार मुझे देखने दूर जाएगा।
हर क्षण भी याद करेगा, तो भी मैं खुद दौड़ता आऊँगा,
अरे मैं तो यहीं खड़ा हूँ, इसी आस में तू मुझे याद करे,
एक बार बहीं खड़े, उसी पल, पुकार के तो देख मुझे।
मुझे लाखों के जेवर, मोतियों का हार नहीं भाएगा,
आज अपने माता-पिता को प्यार से प्रणाम कर मुझे खिलखिलाता पाएगा।
कल मेरे किसी और बच्चे का दुख मिटा-तृप्ति मिलेगी,
उसकी खुशी में देख मेरी चमकती मुस्कान दिखेगी।
जगत में बहुत दुख हैं, हैं बहुत अत्याचार,
बहुत हैं गरीब रे, बहुत हैं लाचार,
आँखें खोल। आँखें खोल रे इन्सान।
मेरी विनती है तुम्हारी प्यारे भगवान।

Disha Vachher
–13/UELA/063

गिनेस बुक रिकॉर्ड

सभी ने गिनेस बुक का नाम तो सुना ही होगा और बहुतों ने उसे पढ़ा भी होगा। यह तो आप जानते ही होंगे कि इसमें किसी भी विद्या में रेकॉर्ड बनाने वाले लोगों का नाम दर्ज किया जाता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि गिनेस बुक के बनने की दास्ता बड़ी ही दिलचस्प और प्रेरणा देने वाली है।

1951 की बात है। इंग्लैंड के एक रईस थे सर हुगो कैंपबेल बीबर। वह गिनेस ब्रेवरीज के निदेशक थे। एक दिन वह अपने दोस्तों के साथ चिड़ियों का शिकार करने के लिए गए, अभी वे अपने शिकार की प्लानिंग कर ही रहे थे कि चिडियों का एक झुंड बहुत तेजी से उनके सिर के ऊपर से निकल गया। बीवर उनके दोस्त हैरान रह गए कि इतनी तेजी से उड़नेवाली ये कौन-सी चिड़ियाँ है? तीनों ने इस बात पर बहस छिड़ गई कि सबसे तेज उड़ने वाली चिड़िया कैसी सी हैं? काफी कोशिश के बाद भी इस बात में कोई फैसला न हो सका। बीवर ने घर आकर यह पता लगाने के लिए गए कि वह पंछी कौन सा है। तमाम किताबें उलटी-पलटी, फिर भी उन्हें अपनी जिज्ञासा का जवाब न मिला। वह लगातार अपने काम में लगे रहे। 1954 में एक किताब में उन्हें अपने सवाल का जवाब मिल गया लेकिन कोई प्रामाणिक जवाब नहीं था।

इस पूरी घटना से बीवर के मन में यह बात आई कि कई लोगों के मन में इस तरह के सवाल आते होंगे और उनका जवाब न मिलने पर इन्हें कितनी निराशा होती होगी।

बीवर ने यह बात गिनेस कंपनी के कर्मचारी क्रिस्टोफर के साथ बाँटी। क्रिस्टोफर ने उन्हें नोरिस और रोस के दो युवकों से मिलाया। यह दोनों लंदन में एक फाक्ट फान्डिंग एजेन्सी चलाते थे। तीनों कि कोशिशों के बाद 1954 अगस्त में गिनेस बुक के शक्ल अक्तियार की, चजो 1955 में पब्लिश हुई। लोगों को यह किताब इतनी पसंद आई कि बाज़ार में इसकी खूब बिकरी हुई। जो आज बरकरार है। इसमें नाम दर्ज करवाने के लिए दुनिया भर के लोग उत्सुक रहते हैं कभी भी क्षेत्र में रेकॉर्ड बनाने वाले का नाम इसमें दर्ज किया जाता है और वह प्रामाणिक होता है।

गिनेस बुक ऑफ वल्ड रिकॉर्ड्स दुनिया भर में मशहूर किताब है और यह नाम अब लोगों के लिए अंजाना नहीं है। अलग-अलग क्षेत्र में बनाए गए ऐसी कीर्तिमान और कारनामें इसमें दर्ज है, जो दूसरों को प्रेरणा देते हैं, हर साल कुछ नए रेकॉर्ड इसमें दर्ज हो जाते हैं, जो इस किताब को ज्यादा उपयोगी व सार्थक बनाते हैं। फिलहाल यह करीब तीस भाषाओं में पब्लिश होती है।

Pragati J.
–13/UELA/019

जीवन एक क्रिकेट मैच की तरह है

जीवन एक क्रिकेट मैच की तरह है,
हर प्रयास एक घरेलू टूर्नामेंट की तरह है,
अपने जीवन में हर सजा एक 20-20 की तरह है,
एक एक दिन, एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय की तरह है,
हर पहाड़ की चढ़ाई एक टेस्ट मैच की तरह है,
आज जीवन में हर चुनौती एक विश्व कप टोर्नमेंट की तरह है,
तो तुम चिंता मत करो,
अपने जीवन को देखो,
क्योंकि जीवन एक क्रिकेट मैच की तरह है।

Jedidah Joshem
–13/UELA/004

प्रपांतरण

उसने चारों ओर देखा
कोई नहीं था उसके नज़दीक
उसे राहत मिली।
और फिर आँसुओं के सैलाब ने
उसके हृत्पिंड को हज़ारों टुकड़ों में तोड़ दिया।
उसे पता था कि शायद
कुछ टुकड़े उसे कभी न मिलेंगे
और उसका दिल
एक अधूरी पहेली ही रह जाएगी।
उसे दिलासा देने वाला कोई नहीं था
और वह उसकी शुक्रवार थी
लोग केवल हालात उलझा सकते हैं।
अपने होश समर्पित कर वह
चीखीं, चिल्लाई रोई।
अंततः खामोशी छा गई।
सब कुछ गतिहीन हो गया
और फिर उसे एक
दीमी खिलखिलाहट की आहट सुनाई पड़ी
यह आवाज़ उसके हृदय के सुराख से
निस्पंदित हो रहा था।
उसके मर्म से खून सूख चुका था
और उसका दिल फौलादी नसो
से पुष्ट हो रहा था।
वह आत्मतुष्ट थी।

Srijeeta Dey
–13/UELA/036

जाने क्या मैं दृढ़ रही हूँ।

जाने कहाँ चली जा रही हूँ?
अनजान रास्तों पर तैरते जा रही हूँ।
जाने मन्जिल कहाँ आएगी।
ना जाने कैसे दिल धड़कायेगी
पल पल से मैं पूछ रही हूँ।
कभी बाग, कभी रास्ते, कभी घर तो कभी हार,
पग पग, मैं पूछ रही हूँ,
कभी दिन, कभी रात तो कभी शाम,
ना जाने क्या मैं दृढ़ रही हूँ?
पल पल से मैं पूछ रही हूँ।
आँखों में कालिमा छाई है,
जैसे, कुछ पाने की ललक लगी है,
होठो पर सुर्खियाँ रम गई हैं,
अब मानो ठंडक पाने को तरस गई है,
अब भी मैं पल पल से यह पूछ रही हूँ,
जाने क्या मैं दृढ़ रही हूँ।
धन दौलत मैं पा गयी हूँ।
जो चाहा वो पा रही हूँ,
वस्तुओं मैं खुशियाँ दृढ़ रही हूँ,
अब मैं इनसे डूब रही हूँ,
अब भी यही प्रश्न पूछ रही हूँ,
ना जाने क्या दृढ़ रही हूँ।

Swati Pandey
–13/UHSA/063

धर्म या अधर्म

राम ही का नाम लेके
राम जो को भूल गए
राम जी के विचार कैसे
आसानी से धुल गए।
एक ऐसी लहर उड़ी
आंधियो से के जहर उड़ी
तत्पर हो गए खून के प्यासे
क्या राम को भी समझ पाए।
एक राम नाम में इतिहास को नकारता है
दूसरा उसके सर में कलम नखाता है
चारों तरफ मची ये अफरा तफरी
पर क्या किसी ने अब तक हमारी सुध ली
जालिमों के इस मेला ने
खद्मर्जो के इस खेल ने
कर दिया हम पर जुल्म
पाने के लिए कुछ पल का सुकून।
न मोह है हमें किसी के सत्ता की
न इन्तज़ार है किसी के विचारों का
राम का नाम लेके
राम को बदनाम मत करो
हिंसा के पुजारियों राम का नाम लेके
हमारी आस्था से खिलवाड़ मत करो।

Amisha Antony
–13/UHSA/032

हमारे पेड़

पेड़- पौधे मानव के हैं मित्र
मंद-मंद हवा के झोकों से खूब है झूमते
मीठे-मीठे फल वे सब को हैं खिलाते
पर्यावरण को प्रदूषण से वे हैं बचाते।
बचपन में झूला बनकर बच्चों को वह झूलाते
आराम के लिए खाट बनकर गहरी नींद वह सुलाते
दर्वाजा बनकर वह सदा घर की रखवाली करते
छाया बनकर वह हमेशा मानव की सेवा करते।
श्यामपट बनकर अक्षरों को आदि गुरू बनाते
कागज़ बनकर अक्षरों के बीच वे उगाते
किताब बनकर ज्ञान की दिया वे जग में जलाते
शिक्षा के स्रोता बनकर क्रांति मार्ग वट दिखाते।
खाना-दाना नहीं माँगते
पैसे-कपड़े वह नहीं पूछते
थोड़े पानी से वह काम चलाते
प्रेम की नज़र सिर्फ वह चाहते।
छाया देते, हवा देते, फल देते
कर्म कांड को लकड़ी देते
लकड़ी के साथ लकड़ी बनकर
तन को जलाकर राख बनाते।
शिव दधीची को वे हैं बुलाते
कितने-कितने अच्छे साथी हमारे
संसार के स्वात हमारे
सारी दुनिया के जान हमारे।

Sruthi Suresh
–13/UHSA/010

देश

देश हमारा सबसे न्यारा
यह हम सबको बड़ा है प्यारा।
उच्च हिमालय इसकी बिन्दियाँ
चरण धोकर बहती नदियाँ
शस्य श्यामला धरती हमारी
सत्य अहिंसा का नारा
सबसे प्यारा देश हमारा।
यह हम सबको बड़ा है प्यारा
सभ्य संस्कृति इसकी पुरानी।
विश्व भर में यही निराली।
बुद्ध, नानक, महावीर जनमे,
पावन धरती यही वह भूमि।
शस्य श्यामला धरती हमारी
सत्य अहिंसा का नारा
उच्च हिमालय इसकी बिन्दियाँ
चरण धोकर बहती नदियाँ।
देश हमारा सबसे न्यारा
यह हम सबको बड़ा है प्यारा।
देश हमारा सबसे न्यारा
यह हम सबको बड़ा है प्यारा

Shruthy K.S.
–13/UHSA/049

एक चेहरा

एक चेहरा जो अक्सर सामने होता था हमारे
जिसकी आँखों के थे हम सब तारे
हमारी साँसे जुड़ी थी जिनके सहारे
ओझल हो गया एक दिन वो चाँद चुपके-से किनारे
उस दिन हो गया घन घोर अंधेरा हमारे जीवन में
टूट गए हम सब खड़े ही खड़े, मन ही मन में
वो हमारी चाँद ही नहीं, दिन का सूरज भी थी
दुनिया में सबसे खूबसूरत माँ की मूरत थी
हाँ अब वो दिन नहीं और रात में वो बात भी नहीं
माँ के न रहने पर खाने में स्वाद भी नहीं
जज्बात वे वो खुद-ब-खुद ज़ाहिर हो जाने वाले वर नहीं
माँ तेरी मोहब्बत के आगे कोई भी खूबसूरत अब शहर नहीं।

Akanksha Rai
–13/UHSA/073

ये पल

चले जाते हैं ये पल,
यादों के साये को छोड़कर
कुछ खुशियों को बिखेरकर,
कुछ गमों को खदेड़कर,
चले जाते हैं ये पल।
कभी मिलना, कभी बिछुड़ना,
वक्त का सिकुड़ना,
वो ठंडे रातों और,
गर्म सुबह को सजाकर,
चले जाते हैं ये पल।
कभी आँखों को नम कर,
कभी चेहरे पर विनोद का,
नाच नचाना है ये पल,
यादों के साथों का जमघट बिखेरकर,
चले जाते हैं ये पल।
हर घड़ी एक नई छाप छोड़ता है,
अभी भी देखो चला जा रहा है।
पल के साथ चलो,
उसके अनुसार करो,
फिर देखो,
वह यादों को तो सजाएगा ही
तुम्हारा साथ भी न छोड़ेगी
तुम्हें वह सुनहरा दिन भी दिखलाएगा।

Batul Mansoor
–13/UHSA/039

पिता

प्यार का सागर ले आते
फिर चाहे कुछ न कह पाते
बिन बोले ही समझ जाते
दुःख के हर कोने में।
खड़ा उनको पहले से पाया
छोटी सी उंगली पकड़कर
चलता उन्होंने सिखाया।
जीवन के हर पहलु को
अपने अनुभव से बताया
हर उलझन को उन्होंने

अपना दुःख समझ सुलझाया
दूर रहकर भी हमेशा
प्यार उन्होंने हम पर बरसाया
एक होती सी आहट से
मेरा साया पहचाना
मेरी हर सिसकियों में
अपनी आँखों को भिगोया
आशीर्वाद अंका हेशा हमने पाया
हर खुशी को मेरी पहले उन्होंने जाना
असमंजस के पलों में
अपना विश्वास को
अपना आत्म विश्वास बनाया
ऐसे पिता के प्यार में से
बड़ा कोई प्यार न पाया।

S. Pavithra
–13/UBTA/011

बड़ी लम्बी जुदाई

एक, दो, तीन ....गिनते-गिनते आज चौदह वर्ष बीत गए। जी हाँ, चौदह वर्ष पहले मैंने इस स्कूल में अपना पहला कदम रखा था। मुझे वह पल याद तो नहीं है पर मेरी माँ मुझे कहती है। लेकिन आप वही आँसू फिर से आँखों से बह रहे हैं। पाठशाला में आज मेरा आखिरी दिन है। और इन आँसुओं का कारण भी वही है जो उस दिन का था। मैं अपनी माँ से बिछड़ रही हूँ।

हाँ, यह पाठशाला मेरी माँ के समान है। जिस तरह माँ अपनी ममता की छाया में अपने बच्चे को बड़ा करती है, उसी प्रकार मेरी पाठशाला ने मुझे बड़ा किया है। जिस माँ की कोख से मेरे जीवन में ज्ञान रूपी रत्न का जन्म हुआ उस माँ को छोड़कर मैं दूर जा रही हूँ। दूर....बहुत दूर भूलने की लाख बार कोशिश करलूँ लेकिन जरूर भूल नहीं पाऊँगी। उसकी यादें सदा खुशियों की बारिश बनके मेरे ख्यालों में बरसते रहेंगे।

याद आएँगे मेरे अध्यापकगण जिन्होंने मुझे हर मुकाम को हासिल करने की प्रेरणा दी। प्रोत्साहित किया। उन्होंने इस छोटी सी पंछी की पंख देखकर उसे एक नयी उड़ान दी। परन्तु अब यह पक्षी अपने बसेरे को छोड़कर इस दुनिया के विशाल आसमान में उढ़ने जा रही है।

'चौदह वर्ष' इस काल को सुनकर अक्सर लोगों को श्री राम का वनवास याद आ जाता है। लेकिन मेरा मानना है कि मेरे जीवन के ये चौदह वर्ष वनवास नहीं, बल्कि स्वर्गवास थे जो हर किसी को नसीब नहीं होते। अतः अगर मुझे ईश्वर से कुछ माँगना हो तो उस स्वर्ग में मुझे एक छोटी सी जगह देने की इच्छा पूछूँगी।

Reshma B.
–13/UBTA/018

क्या सब मैं कर रहा हूँ

उन्होंने कहा कि किसी स्टेज है दुनिया,
और हम सभी लेकिन मात्र अभिनेताओं में यह कर रहे हैं,
लेकिन हम कैसे कई भूमिकाओं खेलने करते हैं
हमारा एकल जीवन की कहानी
मैं बेटी हूँ मेरे माता और पिता का,
मैं पोती हूँ मेरे दादा और दादाजी को,
मेरे चाचा और चाचीजी को एक भतीजी,
मेरे भाइयों और बहनों को एक बहन,
मेरे दोस्तों के लिए एक दोस्त,
मेरे सहपाठियों को एक सहपाठी
एक छात्र अपने शिक्षकों को,
मेरे पड़ोसियों के लिए एक पड़ोसी,
एक अजनबी के लिए कई,
और मैं किसी के कर्मचारी या नियोक्ता किसी दिन होगा,
और किसी की सहयोगी करने के लिए
मेरे प्रेमी प्रेमिका,
मेरे पती की पत्नी,
मेरे माता पिता में कानून को एक बेटी,
एक माँ अपने बच्चों को,
एक चाची अपनी भतीजाँ और भतीजियाँ के लिए,
एक दादी अपने पोते के लिए
और शायद भी मेरा महान भत्य बच्चों के लिए एक महान दादी माँ,
और कुछ दूसरों को पता है मुझे एक नायक,
नर्तकी जो कि सब है?
या किसी भी अधिक भूमिकाओं है कि मैं खेलने के लिए
कर रहे हैं?

Tina E.
–13/UELA/051

आज के रिश्ते नाते

रिश्ते कितनी जल्दी बन जाते हैं,
क्या चाहिए आज इन रिश्तों को
सिर्फ एक नाम
तभी थे रिश्ते वक्त से पहले ही
रिसने से लगते हैं
क्योंकि ये वक्त की कसौटी पर
कसे नहीं होते
आजकल रिश्ते टेड़ीमेड़ से होने लगे हैं,
यूज ऐंड थ्रो की फिलौसफी पर
आधारित ये रिश्ते
जब तक पसंद आए, निभाए
नही तो आगे चल भाए।

Aprajitha Hembrom
–13/UZLA/019

प्रकृति की पुकार

खुदा ने अद्‌भुत दुनिया बनाई, और बनाया इनसान।
ये इनसान था ऐसा कि खुद को समझता था भगवान।
जन-जानवर से छीना अन्न-स्थान, पेड़ों को काटा लिए हथौड़ा
इस प्रकार प्रगति के नाम पर इसने प्रकृति को ही निचोड़ा।।
इसके लोभ के ज़हर से हुए प्रदूषित वायु, पानी और भूमि।
पर फिर भी आँख बन्द किए, इसने अपने पैर पे कुल्हाडी मारी।
ऐ इनसान, पेड़ों को तुम काट तो लोगे।
पर ये बताओ कि प्राण वायु के बिन कैसे जीएगी?
इतने से सन्तुष्ट न हुआ तो प्रकृति में लाया बदलाव।
नए जाति से होगा कल्याण, दिया था यह सुझाव।
पर मानव के इस आविष्कार ने और बिगाड़ा बिगाड़े सन्तुलन को
प्रकृति के गति और नियम से खेलकर, बुलाया पास अपने अन्त को।
सच है कि है अदूरदर्शी और अज्ञानी इनसान
निकट आते प्रलय से है अब तक वह अनजान।
काश ये देख सकता कैसे ये रहा है अपनी और प्रकृति की जान।
तभी बचेगा इनसान, तब प्रकृति को बचाने शुरू करेगा नया अभियान।।

C. Yahavi
–13/UZLA/045

बेटी सबसे प्यारी, सबसे न्यारी

बेटी-की मोहब्बत को कभी आज़माना नहीं,
वो फूल है, उसे कभी रूलाना नहीं।
पिता का तो भात होती है बेटी,
जिन्दा होने की पहचान होती है बेटी।
उसकी आँखें कभी थम न होने देना,
उसकी ज़िन्दगी से खुशियाँ कभी कम न होने देना।
उँगली पकड़ के कल जिसको चलाया था तुमने,
फिर उसको ही डोली में बिठाना है तुम्हें,
बहुत छोटा सा सफर होता है बेटी का साथ,
बहुत कम वक्त के लिए होती है वो हमारे पास।।

Neha Fatima Chouke
–13/UZLA/007

जिन्दगी और जीना

लहरों को चीरने के जोश में
हम लहरों के साथ तैरना भूल गये
बाजी जीतने के जोश में
हम दोस्ती निभाना भूल गये
सफलता की चाहत में
हम इंसान बनना भूल गये
मुश्किलों के सामने
हम हँसना भूल गये।
जिंदगी के बोझ में
हम जीना ही भूल गये।

A. Prathyusha
–13/UZLA/053

आधुनिक शिक्षा प्रणाली

किसी भी राष्ट्र अथवा समाज में शिक्षा सामाजिक नियंत्रण, व्यक्तित्व निर्माण तथा सामाजिक व आर्थिक प्रगति की मापदंड होती है। भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली ब्रिटिश पर आधारित है जिसे सन् 1835 ई. में लागू किया गया। जिस तीव्र गति से भारत के सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक परिदृश्य में बदलाव आ रहा है उसे देखते हुए यह आवश्यक है कि हम देश की शिक्षा प्रणाली की पृष्ठ भूमि, उद्देश्य, चुनौतियों तथा संकट पर गहन अवलोकन करें।

सन् 1835 ई. में जब वर्तमान शिक्षा प्रणाली की नींव रखी गई थी तब लार्ड मेंकाले ने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि अंग्रेजी शिक्षा का उद्देश्य भारत में प्रशासन के लिए बिचौलियों की भूमिका निभाने तथा सरकारी कार्य के लिए भारत के विशिष्ट लोगों को तैयार करना है। इसके फलस्वरूप एक सदी तक अंग्रेजी शिक्षा के प्रयोग में आने के बाद भी 1935 ई. में भारत की साक्षरता दस प्रतिशत के आँकड़े को भी पार नहीं कर पाई। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारत की साक्षरता मात्र 13 प्रतिशत ही थी। इस शिक्षा प्रणाली ने उच्च वर्गों को भारत की साक्षरता मात्र के शेष समाज में पृथक रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ब्रिटिश समाज में बीसवीं सदी तक यह मानना था कि श्रमिक वर्ग के बच्चों को शिक्षित करने का तात्पर्य है उन्हें जीवन के लिए तैयार करना।

लगभग पिछले दो सौ वर्षों की भारतीय शिक्षा प्रणाली के विश्लेषण से यह निष्कर्ष यह निकाला जा सकता है कि यह शिक्षा नगर तथा उच्च वर्ग के, श्रम तथा बौद्धिक कार्यों से रहित थी। इसकी बुराइयों को सर्वप्रथम गाँधी जी ने 1917 ई. में गुजरात एजुकेशन सोसाइटी के सम्मेलन में उजागर किया तथा शिक्षा में मातृभाषा के स्थान और हिन्दी के पक्ष को राष्ट्रीय स्तर पर तार्किक ढंग से रखा। स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में शांति निकेतन, काशी विद्यापीठ आदि विद्यालयों में शिक्षा के प्रयोग को प्राथमिकता दी गई।

सन् 1944 ई. में देश में शिक्षा कानून पारित किया गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत हमारे संविधान निर्माताओं तथा नीति नियामकों ने राष्ट्र के पुनर्निर्माण, सामाजिक-आर्थिक विकास आदि क्षेत्रों में शिक्षा के महत्व को स्वीकार किया। इस मत की पुष्टि हमें राधाकृष्ण समिती (1949) कोठारी आयोग (1966) तथा नई शिक्षा नीति (1986) से मिलती है।

शिक्षा के महत्व को समझते हुए भारतीय संविधान ने अनुसूचित जातियों व जनजातियों के लिए शिक्षण संस्थाओं व विभिन्न सरकारी अनुष्ठानों आदि में आरक्षण की व्यवस्था की। पिछड़ी जातियों को भी इन सुविधाओं के अंतर्गत लाने का प्रयास किया गया।

स्वतंत्रता के बाद हमारी साक्षरता पर तथा शिक्षा संस्थाओं की संख्या में निःसंदेह, वृद्धि हुई है कि स्वतंत्रता के बाद विश्वविद्यालयों में उच्च शिक्षा व प्राविधिक शिक्षा का स्तर बढ़ा है परन्तु प्राथमिक शिक्षा का आधार दुर्बल होता चला गया। शिक्षा का लक्ष्य राष्ट्रीयता, चरित्र निर्माण व मानव संसाधन विकास के स्थान पर मशीनीकरण रहा जिससे चिकित्सकीय तथा उच्च संस्थानों से उत्तीर्ण छात्रों में लगभग 40 प्रतिशत से भी अधिक छात्रों का देश से बाहर पलायन जारी रहा।

देश में प्रौढ़ शिक्षा और साक्षरता के नाम पर लूट-खसोट, प्राथमिक शिक्षा का दुर्बल आधार, उच्च शिक्षण संस्थानों का अपनी सशक्त भूमिका से अलग हटना तथा अध्यापकों का पेशेवर दृष्टिकोण वर्तमान शिक्षा प्रणाली के लिए एक नया संकट उत्पन्न कर रहा है। पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के नए चेहरे निजीकरण तथा उदारीकरण की विचारधारा से शिक्षा को भी 'उत्पाद' की दृष्टी से देखा जाने लगा है जिसे बाज़ार में खरीदा बेचा जाता है। इसके अतिरिक्त उदारीकरण के नाम पर इस प्रकार सामाजिक संरचना से वर्तमान शिक्षा प्रणाली के संबंधों पाठ्यक्रमों का गहन विश्लेषण तथा इसकी मूलभूत दुर्बलताओं का गंभीर रूप से विश्लेषण की चेष्टा न होने के कारण भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली आज भी संकटों के चक्रव्यूह में घिरी हुई है। प्रत्येक दस वर्षों में पाठ्य-पुस्तकें बदल दी जाती है लेकिन शिक्षा का मूलभूत परिवर्तित कर इसे रोजगारोंन्मुखी बनाने की आवश्यकता है।

हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली गैर-तकनीकी छात्र-छात्राओं की एक ऐसी फौज तैयार कर रही है जो अतंतोगत्वा अपने परिवार व समाज पर बोझ बन कर रह जाती है। अतः शिक्षा को राष्ट्र निर्माण व चरित्र निर्माण से जोड़ने की नितांत आवश्यकता है।

Leya Joseph
–13/UZLA/050

विद्यार्थी जीवन

एक विद्यार्थी का जीवन उसकी ज़िंदगी का बहुत अहम हिस्सा है क्योंकि उसी समय विद्यार्थी पढ़ना, लिखना, बड़ों का आदर करना सीखता है। विद्यार्थी कभी अच्छे होते हैं तो कभी बुरे। यह सब उनके दोस्तों के वजह से होता है क्योंकि जैसे दोस्त होते हैं उन पर भी वही असर पड़ता है। हमें अपने विद्यार्थी जीवन में अपने अध्यापक का आदर करना चाहिए। तब ही आगे जाकर हमें सफलता मिलेगी। हमें अपने बड़ों का आदर करना चाहिए। एक विद्यार्थी के जीवन में कई काम होते हैं, पढ़ाई के अलावा जैसे खेलना, परिवार के साथ समय बिताना, पढ़ना, खाना, मस्ती करना आदि।

एक विद्यार्थी का काम होता है कि उसे अपनी पढ़ाई को अच्छी तरह समझ के अच्छे अंक लाने हैं ताकि आगे जाकर वे अपने माता-पिता का नाम रौशन कर सके। भारत सरकार ने हर भारतवासी को मुफ्त विद्या दिया है। खासकर की लड़कियों को ताकि वे जान सके दुनिया में क्या सही है और क्या गलत। आजकल हम सब को होशियार होना चाहिए। हमें रोज़ अखबार पढ़ना चाहिए ताकि हमें पता चले दुनिया में क्या चल रहा है। आजकल हमें सावधान होना चाहिए और सही और गलत का पता होना चाहिए।

बुरे लोगों और बुरे कामों से दूर रहना चाहिए। एक विद्यार्थी के जीवन में सफलता चाहिए तो उसे अपने अध्यापक का पालन करनी चाहिए। उनसे तमीज़ से पेश आना चाहिए। अच्छी आदतों को सीखने का प्रयास करना चाहिए। बुरी आदतों से बचना चाहिए। एक बहुत प्रसिद्ध कहावत है ''जैसी करनी वैसी भरनी'' हम आज जैसे रहेंगे हमारे साथ कल वैसी ही बरताव होगा। इसीलिए हमें हमेशा बड़ों से, छोटों से अच्छा बर्ताव करना चाहिए ।

अगर हम एक अच्छे विद्यार्थी बनेंगे तो हम अपने छोटों के लिए एक मिसाल बनेंगे। और हमारे माता-पिता को हम पर गर्व होगा।

Tayba Habib
–13/USCA/067

भ्रष्टाचार

भ्रष्टाचार अर्थात भ्रष्ट+आचार, भ्रष्ट यानी बुरा या बिगड़ा हुआ तथा आचार का मतलब है आचरण। अर्थात् भ्रष्टाचार का शाब्दिक अर्थ है वह आचरण जो किसी भी प्रकार से अनैतिक और अनुचित हो। ऐसे कार्य अनेक प्रकार के हो सकते है, जैसे अपने फायदे के लिए झूठ बोलना, अपने अधिकार से अधिक किसी से कुछ लेना, अवैध रूप से कोई भी कार्य करना दूसरों को किसी विषय में उचित जानकारी न देना, या घुमा फिराकर जानकारी देना, सरकार को टैक्स न देना और काला धन जमा करना इत्यादि।

आज समाज में हर जगह भ्रष्टाचार अपनी काली छाया डाल चुकी है। आज हर व्यक्ति यह मानने लगा है कि भ्रष्टाचार के बिना वह जी नहीं सकता। भ्रष्टाचारी लोग ही आजकल कुशल एवं व्यावहारिक समझे जाते हैं। अनेक नेता, अधिकारी तथा सामान्य कर्मचारी तक भ्रष्टाचार में शामिल हैं। गाँवों और शहरों के विकास के लिए बहुत से रुपये खर्च होते हैं किंतु विकास नहीं होता या बहुत कम होता है। नेताओं की खरीद बिक्री के मामले भी देखे गये हैं। व्यापारियों की टेक्स चोरी, काला-धन तथा कालाबाज़ारी के बारे में तो अक्सर सुना जाता है। विद्यार्थी भी परीक्षा में नकल करने और अंक बढ़वाने की कोशिश अर्थात् भ्रष्टाचार करने से नहीं चुकते।

औरत पर हो रहे भ्रष्टाचार, गैर कानूनी होते हुए भी साधारण बात हो गई है, लेकिन समाज पर तथा आने वाली पीढ़ियों पर इसका बुरा प्रभाव पड़ता है। आज देश का पिछड़ापन, चापलूसी, सुस्ती रिश्वतखोरी, दहेज, आतंक तथा बेरोज़गारी आदि समस्याएँ भ्रष्टाचार के ही कारण पैदा हुई है। शिक्षा स्तर में गिरावट का भी यही कारण है।

भ्रष्टाचार आज के समाज का सबसे बड़ा शत्रु है। कानून चाहे कितना ही कड़ा क्यों न हो, भ्रष्टाचार को रोका नहीं जा सकता। इसे रोकते और इसे समाप्त करने के लिए जरूरी है कि एक-एक व्यक्ति देश के हित के लिए सचेत हो और हर व्यक्ति में अपने धर्म, अपने देश की संस्कृति और देश की एकता को सुरक्षित रखने की इच्छा हो।

Ramya Unnikrishnan
–13/USCA/048

किताबें

दुनिया में देखो रंग-बिरंगी
छोटी-बड़ी सभी किताबें
हमको देती ज्ञान बहुत-सा,
छिपाए रखती पुरानी यादें।
हमारे कितने काम हैं आती,
चुप, चुप ज्ञान ये दे जाती,
सही गलत में अन्तर करना,
हमको है यें सिखलाती।
ये हमें शिक्षा भी देती,
मनोरंजन भी कराती
सच्ची मित्र ये बनकर
सही राह दिखलाती।

Cynthia Raphael
–13/USCA/051

क्योंकि सपना है अभी भी

क्योंकि सपना है अभी भी
इसलिए तलवार टूटी अश्व घायल
कोहरे डूबी दिशाए
कौन दुश्मन, कौन अपने लोग, सब कुछ धुंध धूमिल
किन्तु कायम युद्ध का संकल्प है अपना अभी भी
क्योंकि सपना है अभी भी।
तोड़ कर अपने चतुर्दिक का छलावा
जब कि घर छोड़ा, गली छोड़ी, नगर छोड़ा
कुछ नहीं था पास बस इसके अलावा
विदा बेला, यही सपना भाल पर तुमने तिलक की तरह आँका था।
किन्तु मुझको तो इसी के लिए जीना और लड़ना
है धधकती आग में तपना अभी भी
क्योंकि सपना है अभी भी।
तुम नहीं हो, मैं अकेला हूँ मगर वह तुम्ही हो जो
टूटती तलवार की झंकार में
या भीड़ के सुनसान हाहाकार में
फिर गूँज जाती हो
और मुझको
ढाल छूटे, कवच टूटे हुए मुझको
फिर तड़प कर याद आता है कि
सब कुछ खो गया है। दिशाएँ, पहचान कुंडल
लेकिन शेष हूँ मैं, युद्धरत् मैं, तुम्हारा मैं
तुम्हारा अपना अभी भी।
इसलिए तलवार टूटी, अश्व घायल
कोहरे डूबी दिशाएँ
कौन दुश्मन, कौन अपने लोग, सब कुछ धुँध धूमिल
किन्तु कायम युद्ध का संकल्प है अपना अभी भी क्योंकि सपना है अभी भी।

Cynthia Raphael
–13/USCA/051

परिवार

हमारा परिवार ही हमारा सब कुछ है।
जब हमें उनकी मदद की जरूरत है तो वे आसपास है।
या हम कभी फँस जाता है तो
हम लड़ते झगड़ते
कभी चिल्लाते हैं और कभी शाप भी करते हैं
लेकिन अंत में हम पुनर्मिलन हो जाते हैं।
परिवार ही हमारा करीबी दोस्त है।
हमारे प्यार आपसी है।
परंतु हम यह कभी नहीं दिखाते हैं।
आगे भी उतार चढ़ाव-हो सकते हैं।
एक परिवार के होके हम सब कुछ पार कर लेंगे।
मेरा परिवार मेरे लिए दुनिया समान है।
कोई उनके जगह नहीं ले सकता है।
हमें उनकी एहमियत और मूल्य समझना चाहिए।

Hasna Jaffar
–13/USCA/005

नारी की स्थिति

आज कल नारी की स्थिति पहले से बेहतर हो गई है। पहले नारी की स्थिति बहुत नीचे थी। नारी का होना, ना होना एक समान था। पहले नारी का एक ही काम था, घर का काम और बच्चों को सम्भालना। पहले नारी को घर के बाहर काम करने की इज़ाजत नहीं थी। वह सारा दिन सिर्फ सफाई, खाना पकाना और घरेलू काम करती थी। नारी को उस समय बहुत कम आधार मिलता था। वह पुरुष के साथ काम नहीं करती थी।

लेकिन आज कल यह सब बदल चुका है, नारी आज कल पुरुष के टक्कर में काम करती है। नारी को बहुत आदर दिया जाता है और उसका दर्जा पहले से बहुत बदतर हो गया है। आज के ज़माने में नारी को किसी की भी जरूरत नहीं है। वह स्वयं कमाती है, और अपना बोझ खुद उठाती है। यह नारी का जमाना है। आज कल नारी को किसी भी चीज में रोक-टोक नहीं है। नारी और पुरुष में आज कोई अन्तर नहीं है। दोनों को पढ़ाई एवं काम करने का हक है। परंतु नारियों के साथ आज भी गलत काम हो रहे हैं, जैसे बलात्कार। एक तरफ नारी का आज़ाद होना अच्छी बात है किंतु दूसरी तरफ खतरा है, क्योंकि कुछ ऐसे लोग भी हैं दुनिया में जो नारी को एक वस्तु मानते हैं,

जो इस्तेमाल किया जाए। जब नारी सावधानी लिए बिना, जब अपना काम स्वयं करने अकेले जाती है, ऐसे असामाजिक लोग उसका गलत फायदा उठाते हैं। आज भी हमारे समाज में स्त्रियाँ असुरक्षित महसूस करती हैं। वे अत्याचार एवं शोषण का शिकार बन जातीं हैं। सरकार ने महिलाओं की भलाई के लिए कई संस्थानों का निर्माण कर रखा है, पर सभी के लिए इसका लाभ उठाना संभव नहीं हो पाता। उसका मुख्य कारण है महिलाओं के लिए बने कानून के बारे में उन्हें स्वयं नहीं पता है।

सरकार का ध्येय यह होना चाहिए कि महिलाओं के अत्याचार एवं शोषण के विरुद्ध बने कानून सबको अवगत कराए जिससे अधिक से अधिक महिलाएँ इसका लाभ उठा सकें।

Zaiba Habib
–13/USCA/068

भारतीयता का एहसास

प्रार्थना की एक अनदेखी कड़ी
बाँध देती है, तुम्हारा मन, हमारा मन
फिर किरती अनजान आशीर्वाद में डूबना
मिलती मुझे राहत बड़ी।
प्राप्त सहा स्नात कंधों पर बिखेरे केश
आँसुओं में ज्यों घुला वैराग्य का संदेश
चूमती रह-रह बदल पर अर्चना की धूप
यह सरल, निष्काम पूजा सा तुम्हारा रूप
जी सकूंगा सौ जनम अंधियारियों में
यदि मुझे मिलती रहे
काले तमस की छाँह में
ज्योति की यह एक आति
पावन घड़ी
प्रार्थना की एक अनदेखी कड़ी।
चरण वे जो लक्ष्य तक चलने नहीं पाए
वे समर्पण जो न होंठों तक कभी आए
कामनाएँ वे नहीं, जो हो सकीं पूरी
घुटन, अकुलाहट, विवशता, वही मज़बूरी
जन्म जन्मों की अधूरी साधना
पूर्ण होती है किसी मधु-देवता की बाँह में
जिंदगी में जो सदा डूबी पड़ी
प्रार्थना की एक अनदेखी कड़ी।

Taania Mona N.
–13/USCA/061

नारी

आओ आज तुम सबको नारी का महत्व बताएँ।
यह जननी है हम सबकी, यह धरोहर है हर घर की
सदा इनका तुम करो सम्मान, इससे होता देश महान
आओ आज तुम सबको नारी का महत्व बताएँ।
नारी का जहाँ सम्मान न हो, देश का वहाँ कल्याण न हो
हमारे देश की शान है नारी,
घर की हमारी मान है नारी।
आओ आज तुम सबको नारी का महत्व बताएँ।
इंदिरा से त्याग तुम सीखो
झांसी की वीरता को तुम देखो
मदर टेरेसा से लो तुम ममता का ज्ञान
नारी तुम तो हो महान।
आओ आज तुम सबको नारी का महत्व बताएँ।
बेटा-बेटी एक समान
बेटी की भी दो तुम ज्ञान।
इन से होता देश महान।।

Vidya
–13/UMTA/513

लक्ष्य

हर किसी के जिन्दगी का एक लक्ष्य होता है।
कोई पास तो कोई फेल होता है।
लक्ष्य की शुरुआत थोड़ी मुश्किल से होती है।
पर उसे हासिल करने वालों की जीत जरूर होती है।
हौसला रखने वालों की एक पहचान होती है।
हाँ, लक्ष्य को पाने की उनमें जान होती है।
जिन्हें जिन्दगी की कठिनाइयों से भय नहीं होता है।
लक्ष्य-हमेशा और हमेशा उन्हीं का होता है।

Matilda Thomas T.
–13/UCHA/016

गुरु का महत्व

गुरु का महत्व कभी होगा न कम
भले ही कर ले कितनी भी उन्नती हम।
वैसे तो है इंटरनेट पर हर प्रकार का तान
पर उससे नहीं हैं अच्छे बुरे की पहचान।।
नहीं है शब्द, कैसे करूँ धन्यवाद

बस चाहिए हर पल आप सबका बड़ा योगदान
आप सबका जिन्होंने दिया हमें इतना ज्ञान।
आप बनाया हमें इस योग्य
कि प्राप्त करे हम अपना लक्ष्य
दिया आपने है हर समय अपना सहारा
जब भी लगा हमें कि हमने है हारा।
परंतु हम हैं कितने मतलबी
याद किया न आपको कभी।
आज करते हैं आप सबका सम्मान।
आप सबको है हमारा शत-शत प्रणाम।

Saheena
–13/UMTA/046

क्रान्ति

बैठी मंडप में दुल्हन नारी,
लाल परदे में छिपी है चाँदनी।
मेहन्दी के हाथ, अल्ता की रानी,
सिंदूर की रक्षक यह नारी।
परंतु अनिश्चितता से ठिठुरती यह सुहागिनी,
न जानती सिंदूर की रेखा है बंधन या मुक्ति।

इसी सुहागिनी का लहु बहाकर पैदा होता सन्तान,
इसी लाल लहु में भीगा वह लेता है पहली साँस।
बच्चे को सीने से लगाकर लेती वह पहली वाचा,
जागी है सुगागिन में शक्ति माता।
परंतु अनिश्चितता से ठिठुरती यह माता रानी,
नहीं जानती कि सन्तान हो न हो बलवान,
ममता है बलदानी।

स्वामी के पहले वार से ही बहता लहु लाल,
रात की खामोशी में ओंस के आँसू रोती।
सुहागिन-कर्तव्य समझ खामोशी का बोझ है ढोती,
यह बंधिन नारी, यह रोषित नारी।
परंतु अनिश्चितता से त्रस्त-वह न जानती।
कि उसकी इस खामोशी में अमवस्य बनी है छाती।।

परंतु जिस दिन संतान है पुकारती
द्रौपदी माँ है पुकारती,
उस दिन शक्ति माता है जागती।
बहता दुर्गा माँ का लहु लाल इस नारी में।
जाग जाती है नारी, जाग जाती है सुहागिनी।
जिस सिंदूर की रेखा की वह रक्षा करती,
जीवित तलवार बन अमावस्या है भगाती।
मिट गया है शोषण, मिट गया है बंधन,
लाल से उत्पन्न होती है मुक्ति।
अनिश्चितता को भगाये, नारी है समझती
सिंदूर है न सिर्फ़ सुहागिन प्रतीक
है वह क्रान्ति, है वह क्रान्ति!

Jemimah Newton
–13/UECA/010

खोया बचपन

अरे देखो छूटा जा रहा है बालपन हमारा,
बचपन की यादें तो है हमारे बुढ़ापे का सहारा।
कैसे भाई-बहन से लड़ते-झगड़ते,
माँ के निर्मल आँचल में खेलते,
मित्र के संग रेत के महल बनाते,
स्वयं ही गिरते, स्वयं ही उठ खड़े हो जाते।
अरे देखो छूटा जा रहा है बालपन हमारा,
बचपन की यादें तो है हमारे बुढ़ापे का सहारा।
बड़ें हुए तो लगा कि हमने दुनिया का बोझ है ढोया,
प्रथम आने की भाग-दौड़ में हमने अपना बचपन खोया।
जो हाथ कभी रंगों से खेला करते थे, वह अब केवल
स्याही से रंग गए।
जो आँखें कभी तारों को गिनती थी, वह अब केवल नोट गिनते
गए।
कहा गई वह उर्जा, वह तेज? ज़िन्दगी ने ले लिया एक नया मेस।
अरे देखो छूटा जा रहा है बालपन हमारा,
बचपन की यादें तो हैं हमारे बुढ़ापे का सहारा।
अब जब जीवन का अंत करीब है आया,
तो हमें यह समझ में है आया, कि
ज़िंदगी की इस दौड़ में, हमने बचपन को भुला दिया,
उसकी मधुर यादों को मिटा दिया,
अब अफसोस करने से नहीं कोई फायदा,
क्योंकि यही है समझ का कायदा।
अरे देखो छूटा जा रहा है बालपन हमारा,
बचपन की यादें तो है हमारे बुढ़ापे का सहारा।
संभालो इसे, देखो फिसले ना यह हाथ से,
मुट्ठी बंद करके, जकड़ो न इसे,
प्यार से अपनी यादों में समालो इसे।

क्योंकि यह पल विदा लेने पर, कभी लौटते नहीं
लेकिन किसे पता, शायद राह में मिल जाए कहीं।
छूटने न दो बालपन हमारा।
क्योंकि यही तो है हमारे बुढ़ापे का सहारा।

Swarna Suresh Tyagi
–13/UECA/039

बच्चे

बच्चे कितने प्यारे
कितने मासूम होते हैं।
छोटे बड़े सबका दिल
जीत लेते हैं।
उनकी मुस्कान से सूखे
पत्ते में भी जान भर जाए।
उनकी खिलखिलाहट से तो
दुखों का अंधकार मिट जाए।
ईर्ष्या द्वेष क्या है।
वे कुछ नहीं जानते।
लड़ते-झगड़ते हैं मगर
झट से फिर दोस्त बन जाते।।
आकाश कितना बड़ा है।
कोयल कैसे गीत गाए?
ऐसे उनके मासूम प्रश्न
विद्वानों को भी उलझाए।।
बच्चे कितने प्यारे
कितने मासूम होते हैं।
छोटे बड़े सबका दिल
जीत लेते हैं।।

Riya Kongra
–13/UECA/035

माँ की याद

एक याद है मेरी माँ की,
वो जब दौड़ती चली आती,
लपटे हुए सुंदर रेशम में,
महकती हुई गुलाब सी,
एक याद है मेरी माँ की,
उसके खूबसूरत बाल लहराते।
उसकी उज्वल मुसकान देखते ही,
खुश हो जाते सारे घर वाले,
काम करते हुए, एक गीत गुनगुनाती,
जो अभी भी मेरे कानों में खनखनाती।।
एक याद है मेरी माँ की,
उसके नैन टिमटिमाते।
अभी देखती हूँ वही जननी को,
प्यार से छूती मुझे, कर्म हाथों से,
न जाने कैसी इतनी नाजुक हो गयी।
कि अब वही साड़ी सिर्फ लटकाती,
एक याद है मेरी युवा माँ की,
जो अब सिर्फ याद बन गई है।

Sneha Sreeram
–13/UECA/059

एक विधवा की आत्मकथा

जी हाँ, मैं बेबस और बेसहारा विधवा हूँ। मेरे जीवन की फुलवारी पूरी खिलने से पहले ही मुरझा गई है। मेरी माँग का सिंदूर ही आज अंगार बन गया है। लेकिन पहले ऐसा न था सिर्फ एक साल पहले का मेरा जीवन। आज उन सुख भरे दिनों की याद आँखों में आँसू भर लाती है और मेरे 'उन' की तस्वीर तो निगाहों से पल भर के लिए दूर नहीं होती।

मेरा जन्म एक संपन्न परिवार में हुआ था। मेरा बचपन बड़ी हँसी-खुशी से बीता। सातवीं कक्षा तक पढ़कर मैंने पढ़ाई छोड़ दी, माता-पिता की लाड़ली जो ठहरी। मैं पहले से ही सुंदर थी। सोलह की उम्र पार करते ही मुझमें और भी निखार आ गया। शीघ्र ही मेरा विवाह एक पढ़े- लिखे और सुंदर युवक के साथ हो गया। हमारा दांपत्य जीवन बड़े सुख से बीतने लगा। पास-पड़ोस की स्त्रियाँ मेरे सुंदर और कीमती गहने-कपड़े देखते ही स्तब्ध रह जाती थी। हर रोज हमारे यहाँ मीठे पकवान बनाए जाते थे। मैं अपने आपको बड़ी भाग्यवती समझती थी। फिर मुन्ने का जन्म होते ही सुख में चारचाँद लग गए।

किंतु मेरा वह सुख एक सपना निकाला। मेरे पति एक स्कूटर-दुर्घटना में बुरी तरह घायल हो गए। मैंने तन-मन-धन से उनकी सेवा की। भगवान से कितनी प्रार्थनाएँ कीं, लेकिन उसे दया न आई। एक दिन वह मुझे और इस भोले शिशु को छोड़कर भगवान के पास चले गए। मैंने रो-रोकर आकाश सिर पर उठा लिया। मेरा प्यारा मुन्ना पापा पापा की रट लगा लगाकर रोता ही रह गया। विधवा होते ही घरवालों का स्नेह उठ गया। सास

ससुर ने मुझे डायन कहा। ननद-भोजाई ने मेरी ओर से मुँह फेर लिया। हाँ, छोटे देवर की सहानुभूति मेरे साथ अब भी पहले जैसी ही है, लेकिन वह बिचारा अकेला क्या करता, सबसे छोटा जो ठहरा। बस। घर का एक कोना ही मेरा आश्रयस्थान बन गया। हँसना-बोलना अब मेरे लिए अपराध था। आज तो मेरा रोना भी समाज की दृष्टि में अशुभ माना जाता है। लोगों के ताने सुनने और पद-पद पर तिरस्कृत होने के लिए ही आज मैं जीवित हूँ।

आज ज़माना काफी बदल चुका है, किंतु विधवा के प्रति समाज का दृष्टिकोण तो पहले जैसा ही संकुचित है। कई बार इच्छा होती है कि सिर पटक-पटककर इस जिंदगी का अंत कर दूँ, लेकिन फिर एक दिन मैंने खुद को बोला, तन्हा बैठकर न देख, हाथों की लकीर अपनी। उठ बाँध कमर और लिख दे, खुद तकदीर अपनी। ठान लिया था मैंने पढ़ना है मुझे, कुछ ज़िन्दगी में करना है मुझे। अपनी राह मैं खुद बनाऊँगी, किसी सहारे की ज़रूरत नहीं हैं मुझे।

Diksha Shriyan
–13/UECA/056

ये जिंदगी, वतन के नाम

ये जिंदगी फिर रहेगी कहाँ,
जाग ऐ वतन के नौजवाँ।
हिमालय की चोटी से आती सदाएँ
तुझको पुकारके कहती हवाएँ
ज़िंदगी निसार कर, कह रही है ये ज़मीन।
इस वतन के वास्ते, मौत से तो डर नहीं।।
बढ़ता जा लेके तिरंगा निसार,
जाग ऐ वतन के नौजवाँ।
तुझको पुकारे वतन की निशानियाँ,
इकलाब लिख दे खून से, लिख दे कहानियाँ।
नाम कर ले तू अमर, फजल वतन की शान परा
डर ना मौत से जवाँ, खेल अपनी जान पर।
तुझको पुकारेगा सारा जहाँ।
जाग ऐ वतन के नौजवाँ।।
ये ज़िंदगी फिर रहेगी कहाँ,
जाग ऐ वतन के नौजवाँ।।

Riya Thomas
–13/UPHA/041

जिंदगी

हम छोटे नन्हें बच्चे,
दर्द, खुशी
इन सब बातों को समझें
पर प्यार किस चिड़िया
का नाम है
वह नहीं जानते हैं।

ज़िंदगी कभी-कभी
खुशी लाती है कभी
दुख लाती है
ज़िंदगी को समझो।

ज़िंदगी हंसने गाने के लिए है
दो पल
इसे खोना नहीं
खोके रोना नहीं

Rose Mary Pious
–13/UZLA/040

उनमुक्त सोच

तेरे लाड़ भरे आँचल गगन की
दुधीली चंदा मैं माँ,
तेरे नयनों की तारा में डोलती रही,
तेरे अरुणिमा की उषा ने
मेरे भीतर सूर्योदय तेज की शोभा भरी।
किंतु मैं जाना चाहती हूँ दूर क्षितिज पार,
जहाँ कोई रोक न टोक
जहाँ हरियाली की कोई सीमा नहीं
जहाँ रंगीले तितली के सपनों पर नहीं कोई रोक
जहाँ प्रदूषण की भयावह मानसिकता नहीं,
पक्षियों के कलरव से फड़फड़ा उठे भोर
हे माँ ! मैं पाना चाहती हूँ तेरे
आँचल रूपी गगन का वह छोर।

Jasper Singh
–13/USCA/047